आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/UD/29-150/2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 4 | अंक 03 | उदयपुर शुक्रवार 15 फरवरी 2019 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

वागड़ से गायब हुई 'वागळी'

मेवाड़ से सटे वागड़ यानी डूंगरपुर-बांसवाड़ा जिलों सहित छोटे-बड़े गावों में खाई जानी वाली 'वागळी' का स्वाद भी निराला है लेकिन वागड़ के गांव, ढाणियों और फलों की जीवन जीने की अपनी अलग ही परंपरा रही है। शिक्षा और विकास की दृष्टि से ये पिछड़े माने जाते हैं।

ऐसे ही दौर से गुजर रही है वागड़ के गांवों में वागळी। गांव का खुला आंगन अथवा पीपल की छांव तले बिछी चारपाई का देहाती अंदाज । ऐसे में छाछ हो या मक्की का रोटला, पत्थर की खरड़ में पिसी चटनी और माटी की हांडी में बना लजीज खाना। विज्ञान का चमत्कार कहें या गांवों का विकास लेकिन आज स्थिति बदली है। ये सब देहात से दूर होकर शहरी जीवन के स्वाद का अहम हिस्सा बन गई। यही नहीं, आज तो पारंपरिक व्यंजन फूड ज्वाइंट्स के मेन्यू में फर्स्ट च्वॉइस में शुमार हो चला है। एक जमाना था जब कमोबेश हर गांव में 'वागळी' को भी बड़े चाव से खाया और घर आए 'पावणों' (मेहमानों) को खिलाया जाता था।

वागळी के साथ छाछ के चटखारों का स्वाद उस दौर के किशोर और बुजुर्गो की जुबां पर आज भी बना हुआ है। बस मौका मिल जाए तो आज भी खाने को जी करता है लेकिन कच्चे मकानों की दीवारों में पत्थर और चूने का प्रयोग किया जाने लगा तो हर आंगन में नजर आने वाली ओंखली भी वक्त के थपेड़ों के साथ अतीत का हिस्सा बन गई।

'वागळी' तभी बन सकती है जब घर के आंगन में ओंखली हो। विद्युतीकरण ने भी ओंखली को गांव से दूर कर दिया। विद्युत चलित चक्कियों के गांव की गलियों में पहुंचने के बाद ओंखली आंखों से ओझल होना शुरू हुई तो आज स्थिति यह है कि दूर-दराज और जंगल क्षेत्र के गांवों में भी ओंखली कहीं नजर नहीं आती।

'वागळी' बनाने के लिए धान को ओंखली में मूसल से कूटा जाता था। दो महिलाएं आमने-सामने दो मूसल लेकर धान को एक साथ या बारी-बारी से कूटती। करीब घंटा भर कूटने के बाद धान को सूपड़े में डाल चावल और धान के छिलकों को अलग किया जाता था। धान कूटने की प्रकिया में धान से अलग हुआ कुछ चावल भी टूट जाता और आटेनुमा बारीक आटा हो जाता था। यह चावल का बारीक आटा ही 'वागळी' कहलाता था जो इकट्ठा कर रख लिया जाता था।

इसी 'वागळी' के बदले पास के गांवों से छाछ भी लाते थे तो इसी के रोटले बना कर बड़े चाव के साथ खाई जाती थी। आड़ीवली निवासी गृहिणी श्रीमती सोनी लबाना कहती है कि बचपन में 'वागळी' खूब खाते क्योंकि यह बलवर्धक भी होती थी। रोटले भी बनाते तो कच्ची भी खूब खाते। एक मुट्ठी 'वागळी' के लालच में बच्चे दिनभर घर के काम में मदद देते थे तो पड़ौसियों का काम किया करते थे और मजे की बात यह कि घर वाले भी डांटते-डपटते नहीं थे। आसपास के छोटे बालकों को भी बुला कर 'वागळी' खिलाते तो बड़े-बुजुर्ग भी इसे चाव से खाते। वाकई लाजवाब होती थी गांव की 'वागळी'।

प्यार के दस आंकड़े

(1)
प्यार मकड़ी के जाले से भी बारीक
जो टूट गया तो गया
और रह गया तो
दगदगा बना रहता है टूटने का।

(2)
प्यार में दुलार होता है
गाय-बछड़े सा
बछड़ा किल्लोली करता है
झरता है मातृत्व चारों थनों से
सुख भरा सर्वस्व धवल दुग्ध सा।

(3)
प्यार में समझदार को इशारा काफी है
किसी ने देख लिया तो
जूते पड़वायेगा
नहीं देखा तो
क्या खाक प्यार करेगा?

(4)
प्यार डरते-डरते होता है
बमुश्किल
करते-करते होता है बमुश्किल
मरते-मरते होता है बमुश्किल।

(5)
प्यार कहां रखोगे
कहीं भी नहीं है जगह
सब तरफ आंखें लगी हैं
एक हिया था खाली
वहां भी आंख जा लगी।

(6)
प्यार अठकली फूल
आठों प्रहर
चुभोवन देता शूल।

(7)
भंवरे ने कली को
झंझोड़ दिया
कली क्या कहती
बेखबर उम्र में कोई खबर दे गया।

(8)
सोई हुई रात में
समंदर सा उफान देती नदी ने
तबाह कर दिये दोनों तटों को।

(9)
बैल ने गाय के थन गुदगुदाये
गाय ने उसकी आंख की कोर में
अपना नुकीला
सींगड़ा फिरा दिया-
समझलो
प्यार का सिलसिला शुरू
होगया।

(10)
चलती गाड़ी में
हिये से हिया टकरा गया
मैं ढूंढता रहा
कोई आंख तो मिले।

अविस्मरणीय.....

महाराणा मेवाड़ फाउण्डेशन, उदयपुर द्वारा पहलीबार 1984 में महाराणा सज्जनसिंह पुरस्कार प्रारम्भ किया गया। पहलीबार यह पुरस्कार लोककला के क्षेत्र में मूल्यवान योगदान के लिए डॉ. महेन्द्र भानावत को प्रदान किया गया। समारोह पूर्व स्वागत कक्ष में फाउण्डेशन के संस्थापक महाराणा भगवतसिंह मेवाड़ डॉ. महेन्द्र भानावत का अभिवादन करते हुए।

इस अवसर पर समारोह में समाजसेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धि के लिए पं. जनार्दनराय नागर को तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में ख्यातिलब्ध पहचान देने वाले धर्मयुग के सम्पादक डॉ. धर्मवीर भारती को हल्दीघाटी पुरस्कार से नवाजा गया। डॉ. भारती के साथ उनकी सहधर्मिणी डॉ. पुष्पा भारती तथा केशव 'पथिक' उपस्थित थे। उन दिनों पुरस्कार पाने वालों की आज की तरह होड़ नहीं थी। महाराणा स्वयं विभिन्न क्षेत्रों में साधनामूलक समर्पण दिये लोगों की परख रखते थे। इस कार्य में प्रो. देवकर्ण सिंह तथा डॉ. हरिराज त्यागी उनके मुख्य सलाहकार थे।

विदा होती लड़की को वांदरवाल

-डॉ. कहानी भानावत-

विवाह के पश्चात आने वाली प्रथम दीवाली पर लड़की को उसके पीहर की ओर से मुकलावा कराया जाता है। इसे मेवाड़ की ओर आणा कराना कहते हैं। इसकी तैयारी बहुत पहले से शुरू कर दी जाती है। आणा लेने जंवाई अता है। वह अपने साथ नाई तथा सेवग लाता है जो उसकी हालटेल यानी सेवा, में रहता है। जंवाई को अलग से निवास हेतु सजासजाया कक्ष दिया जाता है जहां उसके मनोरंजनार्थ-मनबहलावार्थ उसके हम उम्र के साथी-समधी उसकी सुश्रुषा में बने रहते हैं। देखते-देखते यह प्रथा विलुप्त हो गई।

जंवाई के लिए रंग-ठंडाई और अच्छे खान-पान की व्यवस्था की जाती। ताश और अन्य खेल खेले जाते थे। जंवाई को दोनों समय नित नया जीमण कराया जाता था। नये-नये पकवान-मिष्ठान्न बनाये जाते थे। जीमते वक्त औरतें गीत गाती थी। जंवाई की साला हेलियां नानाप्रकार के कौतुक करती थीं। महीने-महीने भर तक जंवाई को बड़े ठाठबाट से श्वसुरगृह रखा जाता था। जंवाई खूब तातामाता होकर सजोड़े अपने घर लौटता था।

विदाई के वक्त मुख्यत: लड़की के लिए गृहोपयोगी चीजें दी जाती थीं। इनमें से उसके पहनने के कांचली-कापड़े, साड़ियां, हवा करने की बीजणी, अटरम-सटरम चीजें रखने के लिए खुलेची, सजावटी मांगलिक रुई-कपड़े के बने मनोहारी हाथी, घोड़ा, ऊंट दिये जाते थे। इन सबमें सर्वाधिक आकर्षक वांदरवाल दी जाती थी। गृहिणियां स्वयं इन्हें तैयार करती थीं।

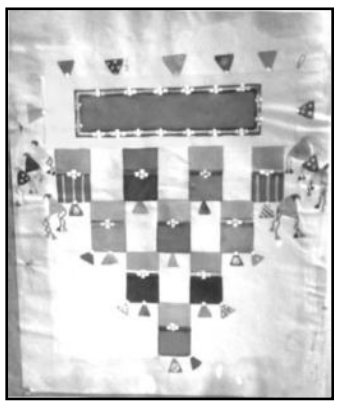

वांदरवाल रंगबिरंगी कोथलियों से बनाई जाती। मुख्यरूप से यह दस कोथलियों वाली होती। चार, तीन, दो और एक के क्रम में ऊपर से लेकर नीचे तक कोथलियां आपस में लड़ी बनाती जोड़ी जाती। ऊपर ही ऊपर एक लम्बा पट्टा होता फिर उससे कोथलियां जोड़ी जातीं। यह पट्टा अस्तर लिए होता। नीचे का अस्तर सफेद महीन कपड़े का होता। कोथलियां करीब एक बेंत की होतीं। इन्हें खूबसूरती देने के लिए किनारे पर फूंदे, ऊपर छोटे-छोटे कपड़े-रुई के बने मिठू (तोते) लगाये जाते। सिंघाड़े, चमरे निकाले जाते। रंगबिरंगी कोथलियों के रंगबिरंगी मगजी तथा रुपहरी-सुनहरी पतली कौर लगाई जाती। ऐसी ही पट्टी सजाई जाती। विविध रंगी मोती, लालें तथा चीड़ें लगाई जातीं।

यह वांदरवाल घर की मुख्य दीवाल या फिर पानी रखने के स्थान परींडे पर लगाई जाती। कोथलियों में छोटी-मोटी काच-कांगसी, सुई-डोरा, गूंदी-बटन जैसी चीजें रखी जातीं। देखतेअदेखते नई हवा-रोशनी के कारण ऐसी शानदार परम्पराएं जैसे हमारे जीवन से ही रेत की तरह फिसल हवा हो गईं। वांदरवाल के साथ वह बधावा गीत भी गाया जाता जो हमें शुभ शकुन देता और घर में मंगल-मांगल्य बनाये रखता-

मोत्यां रा लूमक झूमका
कसतूरी ओ राजा वांदरवाल
बधावो जी म्हारे आवियो।

पोथीखाना

मामूली नहीं है 'संजीव समय'

संजीव हम सबके बीच संस्कारों की सिलबट्टी पर रेत सी तपन लिए एक तपसी की तरह है

कल्याणसिंह कोठारी द्वारा सम्पादित एवं लोकसंवाद संस्थान 2/633, जवाहरनगर, जयपुर से प्रकाशित 'संजीव समय' डॉ. संजीव भानावत पर केन्द्रित संस्मरणों का महत्वपूर्ण संकलन है। अपने साठ वर्ष पूरे करने पर जुलाई 2018 में संजीव जयपुर विश्वविद्यालय के जनसंचार केन्द्र के 28 वर्ष तक हेड रहे। वहीं जैन अनुशीलन केन्द्र के 6 वर्ष तक निदेशक भी रहे।

असाधारण प्रतिभा के धनी तथा सदैव कर्मशील रहे डॉ. संजीव भानावत ने जितनी राष्ट्रव्यापी संगोष्ठियों, सेमीनारों, कार्यशालाओं तथा समारोहों में भाग लिया और अपने यहां जो आयोजन किये उनकी सूची ही अद्‌भुत अनुपम है। जनसंचार विषय पर उनकी कई पुस्तकें विद्वानों तथा अनुसंधित्सुओं के लिए उपयोगी सिद्ध हुई हैं। गत 22 वर्षों से वे कम्युनिकेशन टुडे का सम्पादन-प्रकाशन करते आ रहे हैं जो इस क्षेत्र की अत्यतम उपलब्धि है।

प्रस्तुत ग्रंथ में 150 पृष्ठों में डॉ. संजीव के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर उनके सम्पर्क में आए एक सौ से अधिक विद्वानों, विशिष्ट महानुभावों, विशिष्ट छात्रों तथा शोधार्थियों ने उनकी आदर्श खुशमिजाजी, स्नेहशील मृदुल व्यवहार, ज्ञानशील विनयभाव तथा चेतनाशील समझ-संस्तुति पर बड़ा ही भावप्रवण आत्मीय लेखन दिया है।

उल्लेखनीय पक्ष यह भी है कि डॉ. संजीव का पूरा परिवार ही विद्वत-विरासत लिए है। पिताश्री डॉ. नरेन्द्र भानावत, माताश्री डॉ. शांता भानावत एवं काकाश्री डॉ. महेन्द्र भानावत अपने-अपने क्षेत्र में कहीं अजान नहीं हैं। यहां डॉ. संजीव पर डॉ. महेन्द्र भानावत ने जो उद्‌गार व्यक्त किये, प्रस्तुत हैं-

संजीव भानावत एक अहर्निश पवन की बहती धार, एक यात्रावाही चैतन्य का उड़ता समंदर और प्रज्ञावान पाटी पर चितराम उकेरता एक बौद्धिक ब्रश है। कभी वह किताबों में खोया रहता तो कभी किताबें उसके इर्दगिर्द गुड़ पर मक्खियों की तरह रहती हैं। कभी वह मोबाईल में मननशील मिलता है तो कभी क्लासरूम में चटखारे बिखेरता।

संजीव के बचपन की बालकनी को छोड़ भी दूं तो उसके बड़े-से-बड़े होने की कई दास्तानें झकोलमा पूड़ी की तरह मेरी स्मृतियों से तर हैं। उसके पिता, मेरे अग्रज डॉ. नरेन्द्र भानावत जिनके लिए मेरा 'दादाभाई' सम्बोधन ही पूज्यवर रहा, सदैव ही सरलचित्त और पारदर्शी मन के सहज और सुधर्मी इन्सान थे। वे सदैव ही अपने अध्ययन और अध्यापन में भी शीर्ष पर रहे।

कविता, कहानी, निबंध लेखन से लेकर वाद-विवाद, अन्त्याक्षरी, सम्पादन, समीक्षायण तथा राजस्थानी हस्तलिखित ग्रंथों का पारायण करने तथा उनकी पहचान देने के क्षेत्र में सदैव ही उनकी असाधारण उल्लेखनीय भूमिका रही। हिंदी के साथ-साथ उन्होंने जैनधर्म-दर्शन में भी अपनी अच्छी साख और पैठ बनाई।

इन सबका संस्कारी लाभ संजीव के खाते में खतौनी पाता रहा। संजीव को पहली नौकरी हिंदी व्याख्याता के रूप में डूंगरपुर के राजकीय महाविद्यालय में मिली तो सुख मिला कि वह मेरे नजदीक है सो सप्ताह में शनिवार को उदयपुर आकर एक दिन सबके साथ रह लेगा पर सबने यह उचित ही समझा कि अच्छा हो

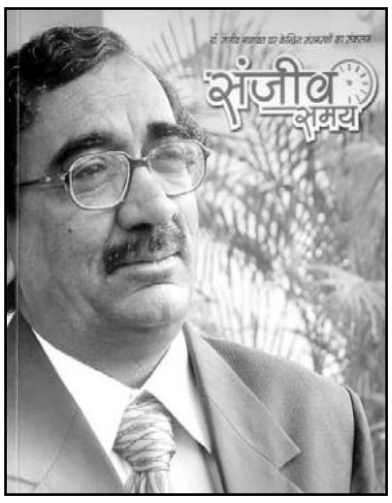

उसको या तो उदयपुर या फिर जयपुर में ही जगह मिल जाय। भाई साहब को कहा कि वे चाहें तो यह कार्य सेंतमेंत में ही हो सकता है।

तब कॉलेज शिक्षा निदेशक उनके गुरु ही थे जिनसे वे बीकानेर में पढ़ चुके थे। वे भाई साहब से बड़े प्रभावित भी थे। जब-जब भी भाई साहब ने जिस किसी प्रतियोगिता में भाग लिया, डूंगर कॉलेज का नाम रोशन किया। बीकानेर के साहित्य समाज में भी उनकी अच्छी प्रतिष्ठा थी। वहां की मुख्य-प्रमुख संस्थाओं और विद्वानों से उनका निजी गहरा संपर्क था। बी.ए. में भी हिंदी में सर्वाधिक अंकों से उन्होंने राजस्थान विश्वविद्यालय का खेतान स्वर्ण पदक प्राप्त कर कॉलेज को ऐतिहासिक उपलब्धि दिलाई थी।

लेकिन भाई साहब सर्वदा अपने बल पर अपना काम करने के पक्षधर थे। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की यह पंक्ति - 'स्वावलंबन की एक झलक पर न्यौछावर कुबेर का कोश' उनकी जीवनेच्छा की प्रमुख आधार बनी हुई थी।

सो हमसे बोले- संजीव को आगे जाकर अच्छे गृहस्थ की भूमिका का निर्वाह करना पड़ेगा इसलिए डूंगरपुर में अकेला रहेगा तो वह सब अनुभव कर लेगा अन्यथा कहीं कुछ सीख नहीं पायेगा। आवश्यक चीजों की खरीद फरोख्त करने से लेकर रसोई से जुड़े काम का भी एक सीमा तक अनुभव होना जरूरी है सो उसे वहीं रहने दिया जाय। लेकिन किसके भाग्य में क्या लिखा है, उसे कौन जान पाया। भाग-जोग से उसका तबादला नसीराबाद हो गया तो भाई साहब खुश हुए कि संजीव का जयपुर से अति निकट आना स्वत: ही हो गया।

एक दिन मैंने संजीव को कहा कि अपन सब हिंदी के हैं। यह एक संदर्भ में तो बहुत अच्छा है पर इसके रहते अपनी स्वतंत्र पहचान मुश्किल से ही बन सकेगी। तुम्हारे-मेरे साथ भाई साहब के नाम का ही पौवा चलता रहेगा। यही सोच मैंने लोककला का क्षेत्र चुना और तुम भी यदि मौका मिल जाय तो कोई दूसरा क्षेत्र पकड़ने में हिचक मत करना। इससे हमें यह प्रेरणा मिलती रहेगी कि भाई साहब ने अपने बूते पर हिंदी में जो काम किया, हम भी उनसे प्रेरणा लेकर अपने क्षेत्र में कुछ कर दिखायें।

मुझे खुशी है कि संजीव ने पत्रकारिता के क्षेत्र में अपना सर्वस्व समर्पण भाव देकर अपनी स्मरणीय पहचान बनाई। बहुत कम उम्र में उसने राजस्थान विश्वविद्यालय में पत्रकारिता विभाग का बड़ी कुशाग्रता से संचालन कर विभाग की ओपमा बढ़ाई और इस क्षेत्र में विभिन्न विषयों पर जो पुस्तकीय लेखन दिया उससे उसकी प्रतिष्ठा भी बढ़ी।

भाई साहब ने अपने जीवनकाल में कई पत्र-पत्रिकाओं का बड़ी सफलता के साथ संपादन किया। संजीव ने 'कम्युनिकेशन टुडे' का संपादन कर जो भारतव्यापी प्रतिष्ठा अर्जित की वह भी सर्वप्रकारेण उल्लेखनीय है।

किसी व्यक्ति की सबसे बड़ी उपलब्धि यही है कि वह अंत तक ज्ञानप्राप्ति की ललक और तड़फ लिए लगनशील बना रहे। संजीव ने भाई साहब की देन को बहुत ऊंचाई तक उत्कर्ष ही नहीं दिया, उनके साथ अपनी सीढ़ी को भी सलामत रखते हुए शिक्षा जगत को जो योगदान दिया, उसका मूल्यांकन करने का अभी समय नहीं है।

सच तो यह भी है कि हम सब लोग किसी चाह, उम्मीद और आकांक्षा के लिए कुछ भी नहीं कर रहे हैं। बस कर रहे हैं उसी तरह जैसे किसी के खुजाल चलती है तो उसे मिटाने के लिए खुजलाना ही पड़ता है। ऐसे में संजीव हम सबके बीच संस्कारों की सिलबट्टी पर रेत सी तपन लिए एक तपसी की तरह है।

- डॉ. तुक्तक भानावत

टेढी-टेढी चाल

व्यंग्य लेखन गद्य की एक ऐसी कसौटी है जिस पर खरा उतरना लेखक के लिए एक बड़ी चुनौती है। कथानक का ताना-बाना बुनने के बाद व्यंग्य रचना का जो फलक तैयार होता है, वह व्यंग्यकार की भाषा-शैली और कथोपकथन पर निर्भर करता है। इस दृष्टि से लेखक हरमन चौहान ने देशकाल, वातावरण, पात्र एवं चरित्र-चित्रण का सूक्ष्मता से ध्यान रखते हुए एक ओर जहां पाठकों को गुदगुदाया है, वहीं दूसरी ओर उन्हें यह सोचने पर विवश कर दिया है कि इन विसंगतियों और समस्याओं का समाधान क्या है।

प्रस्तुत कृति 'टेढ़ी-टेढ़ी चाल' में राजनीति पर गहरा कटाक्ष है। लेखक देश की भावी पीढ़ी को एक गहरा सन्देश देता है कि यदि राजनीति का वर्तमान रूप इसी तरह विकृत रहा तो भावी राजनेताओं से राष्ट्र क्या अपेक्षा करेगा! कृति के प्रारम्भ में ही लेखक का यह कथन दृष्टव्य है-

'भीतर से जवाहर मुस्कराता हुआ आता है और खूंटी पर टंगी हुई टोपी सिर पर पहनता है। कुर्सी के पास आकर उसे नीचे से झुक कर प्रणाम करता है फिर उस पर आहिस्ते से बैठता है।' यह ठीक उसी प्रकार लगता है जैसे एक दुकानदार अपनी दुकान खोलने के बाद पेड़ी को हाथ से छूकर अंगुलियों को सिर पर लगाता है।

कुर्सी के साथ ही व्यंग्यकार ने दलबदलू नेताओं को भी आड़े हाथों लिया है। जवाहर और राम के सम्वाद इस दृष्टि से बेहद प्रभावशाली बन पड़े हैं-

राम - भूलना नेताओं का स्वभाव होता है, मगर एक चीज हम कभी नहीं भूल सकते।

जवाहर - कौन सी चीज?

राम - कुर्सी (ठहाका)

जवाहर - प्राण जाय पर कुर्सी नहीं जाय।

राम - तो टोपी एक बार और बदल ली जाय।

(दोनों टोपी बदलकर गले लगते हैं।)

सूत्रधार के रूप में नेता जवाहर और पत्नी कला के सम्वाद शुरू से अन्त तक चुटीले बन पड़े हैं। पारस्परिक पारिवारिक सम्वादों के साथ-साथ राजनीति से जुड़े सम्वादों की अदायगी सियासत पर सटीक प्रहार करती है। जवाहर और कला के बीच प्रेम और तकरार भी बेहद प्रभावित करती है।

नाटक के अन्त में आते-आते जवाहर अपनी पत्नी को इमरती कह डालता है और

कला अपने नेता पति को घेवर की संज्ञा दे दती है। इमरती के कटाक्ष तो मीठे और रसदार हैं ही, परन्तु घेवर मीठा है अथवा फीका, यह व्यंग्यकार ने नहीं कहा है। कदाचित नेताओं के पैंतरे बदल गुणों के कारण लेखक ने पाठकों को यह सोचने के लिए मजबूर किया हो।

झुनझुनवाला एक पत्रकार है। उसके माध्यम से लेखक ने मीडिया पर भी वर्तमान राजनीति के तथाकथित हठकण्डों पर प्रहार किया है। राजनीति में राजनेता और उनके पी. ए. की कितनी महत्वपूर्ण भूमिका होती है यह सर्वविदित है। इसमें राजनीति में खण्डन और मण्डन की प्रवृत्ति का अपना विशेष रंग है। जवाहर और पी. ए. श्रीवास्तव के बीच हुए वार्तालाप यह जानने के लिए पर्याप्त हैं। दोनों के बीच का सम्वाद विषयानुकूल है-

जवाहर - श्रीवास्तव

श्रीवास्तव - यस सर

जवाहर - ये जितने भी आरोप हैं। झूठे हैं, निराधार हैं। इसकी खबर प्रेस में दें। अपनी पब्लिसिटी होगी। मैं उसका खण्डन करूंगा।

श्रीवास्तव - सभी आरोप झूठे हैं तो आप खण्डन कैसे करेंगे।

कृति का शीर्षक सटीक और सार्थक है। यदि व्यक्ति सही राह पर चले तो सीधी-सीधी चाल कही जाती है पर यहां तो चलने वाले टेढ़ी चाल के हैं। कुल 160 पृष्ठीय इस नाटक का मूल्य 200 रूपये है। पुस्तक अनुविंद पब्लिकेशन, उदयपुर द्वारा प्रकाशित हुई है।

- तरुणकुमार दाधीच

स्मृतियों के शिखर (69) : डॉ. महेन्द्र भानावत

सांपों के अजूबे साथी डॉ. त्यागी

लोगबाग जैसे अपने घरों में कुत्ते और बिल्लियां पालते हैं, वैसे ही उदयपुर के सर्प अध्येता डॉ. हरिराज त्यागी को प्रारम्भ से ही सांपों में अभिरुचि रही। एक बार 9वीं कक्षा में पढ़ते थे तब बिल में घुसते एक सांप की पूंछ जोर से पकड़ कर काफी समय तक थामे रहे। सांप ने छुटने का बहुत प्रयत्न किया मगर उसका कोई दांव नहीं लगा। तभी से डॉ. त्यागी ने सांप की शक्ति के साथ-साथ अपनी ताकत को भी भलीप्रकार तोल लिया। आगरा कॉलेज में पढ़ते समय सूरदास की जन्मस्थली रूणकता में भ्रमणार्थ गये तो वहां कीटम झील पर, जहां परशुराम का सबसे बड़ा मन्दिर है, एक सांप पकड़ कर अपने सभी साथियों को चकित कर दिया। यहां अपनी पढ़ाई पूरी कर जब अलीगढ़ के धर्म समाज कॉलेज में प्राणिशास्त्र के प्रवक्ता बने तो वहां सांप पकड़ने के साथ-साथ उन्हें अपने घर में पालना प्रारंभ कर दिया।

सांपों के प्रति डॉ. त्यागी की यह ललक दिनोंदिन बढ़ती रही। सन् 1967 में उदयपुर विश्वविद्यालय में इनकी नियुक्ति हुई तो यहां उनके इस अध्ययन को नया आयाम मिला। यहीं उन्होंने सांप को अपने विशेष अध्ययन व अनसंधान का विषय बनाया और पीएच. डी. प्राप्त की उपाधि प्राप्त कर सर्पशास्त्र को अपनी नवीन खोजों से समृद्ध किया।

उदयपुर झीलों की नगरी भी है तो यहां पहाड़ी इलाका भी है। बरसते बादलों तथा भयावनी बिजली की घनघोर रातों में डॉ. त्यागी ने यहां के जंगलों तथा पहाड़ियों की चप्पा-चप्पा भूमि को अपने पैरों तले रौंदा है और कभी सांपों के सीधेपन तथा सरल प्रकृति पर विस्मय प्रगट किया, तो कभी उनकी खौफनाक आक्रामक हरकतों तथा प्राणलेवा चालों पर मौत की छाया भी झेली है।

डोरेनगर में अपने घर पर 18 अप्रेल 1978 को डॉ. त्यागी ने मुझे बताया कि उनके लिए सांप एक खिलौने से अधिक कुछ नहीं है। पिछले वर्षों में उन्होंने जो सांप पकड़े उनकी संख्या तेरह सौ से भी अधिक है। पचासों सांप, एक-से-एक जहरीले, उन्होंने अपने घर में पाल रखे हैं। कुत्ते-बिल्लियों की तरह उन्हें खुला छोड़ रखा है और उनके साथ सोते, उठते, बैठते और लाड़ लड़ाते हैं। गत नौ वर्षों से उन्होंने एक वाइपर पाल रखा है जो यहां के चम्पाबाग से पकड़ा गया था। तब यह लगभग 40 सेंटीमीटर लम्बा तथा आधा किलो वजनी था। अब इसकी लम्बाई एक मीटर तथा वजन लगभग चार किलो है।

डॉ. त्यागी ने सर्वाधिक महत्वपूर्ण सांप यहां के सगसजी बावजी परिक्षेत्र गुलाबबाग से पकड़ा जो उदयपुर क्षेत्र में अन्यत्र कहीं नहीं देखा गया। भूरे रंग का यह छोटा कोबरा हलका ललोवा लिए था। इसके सामने की ओर दो काले गोल धब्बे थे तथा फन के पीछे की ओर सफेद रंग का, त्रिशूल की तरह का तिलक था। इसकी गर्दन के चारों ओर माला के रूप में काली-सफेद पट्टिया थीं। इसे उन्होंने सर्कस के जानवरों की तरह ऐसा प्रशिक्षित किया कि अपना फन फैलाये मन चाहे स्थान पर बैठा रहता था।

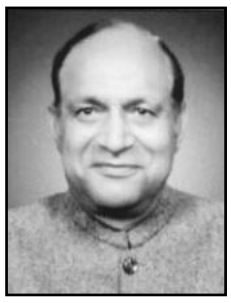

शिवजी के साथ यह प्रसिद्धि है कि उन्हें सांप बड़े प्रिय थे और हर समय सांप उनकी गर्दन में लिपटे रहते थे। डॉ. त्यागी ने भी अपनी प्रयोगशाला में ऐसा ही एक प्रयोग नाग को लेकर किया। नर कंकाल वाले शोकेश में उन्होंने नाग छोड़ दिया। दूसरे दिन जाकर देखा तो वह शिवजी की ही तरह उस कंकाल की गर्दन में लिपटा हुआ था। यों उस पूरे कंकाल में बहुत सारी जगह ऐसी थी जहां सांप रह सकता था मगर उसने गर्दन में लिपटना ही पसंद किया और ऐसा चिपका रहा कि बड़ा प्रयत्न करने पर ही उसने उस स्थान को छोड़ा।

सांप पकड़ने के डॉ. त्यागी के कई अद्‌भुत घटना प्रसंग ऐसे हैं जिन्हें वे कभी विस्मृत नहीं कर सकते। एकबार रात्रि को करीब नौ बजे उदयपुर के शास्त्री सर्कल के नीचे वाली सड़क के किनारे लोगों की भीड़ जमा थी। डॉ. त्यागी ने देखा, पास ही के शीशम के वृक्ष की ऊपरली डाल पर सांप लटका हुआ था। डॉ. त्यागी उस सांप को पकड़ने के लिए तैयार हुए। उन्होंने लोगों से कहा जहां सांप है वहां टॉर्च का प्रकाश बनाये रखें पर कोई इसलिए तैयार नहीं हुआ कि कहीं रोशनी के सहारे सांप उतर कर उन्हें ही न डसले। डॉ. त्यागी ने आव देखा न ताव, आसरे से सांप तक गए और बड़ी होशियारी से उसे पकड़ लिया। एक हाथ में सांप लिए डॉ. त्यागी उस वृक्ष से उतर आए।

बरसात के दिनों में गणेशघाटी पर रह रहे एक मकान में दीवार के पास दो वर्ष का एक बच्चा सोया हुआ था। उसके पास उसका भाई और उसके पास उसकी मां सोयी थी। कोई बारह बजे जब जोर की बरसात हुई तो छत टपकने लगी। घरवाले उठे। बत्ती जलाई तो देखा कि दीवार के पास बच्चे से लगा हुआ एक काला सर्प फन फैलाए बैठा है। सारे घरवाले तो परेशान थे ही, अड़ोसी-पड़ोसी तक परेशान थे। इतने में किसी ने डॉ. त्यागी का नाम बताया। तत्काल उन्हें बुलाया गया। डॉ. त्यागी ने सांप का सारा अध्ययन कर तत्काल बिजली गुल कराई और टॉर्च के प्रकाश के सहारे सांप को जा पकड़ा। इसी प्रकार एकबार कुत्ते के पिल्लों के बीच पड़े सांप को पकड़कर पिल्लों की रक्षा की।

उदयपुर के अस्पताल में सांप काटने से एक महिला भरती हुई। उसके बचने की कोई उम्मीद न पाकर आसपास के सारे सगे-सम्बंधी बुला लिये गए। इतने में किसी ने डॉ. त्यागी को बुला लाने को कहा। तत्काल डॉ. त्यागी वहां पहुंचे। लगभग दो सौ आदमियों की भीड़ वहां एकत्र थी। त्यागीजी ने पहुंचते ही उस महिला को देखा तो इस बात पर बड़ा अचरज हुआ कि सर्प-भय से जो महिला मरणासन्न है उसे सर्प की बजाय किसी चूहे ने काटा है। उन्होंने सारी भीड़ को वहां से हटाया और आश्वस्त कर दिया कि चिंता जैसी कोई बात नहीं है। जब पूरी भीड़ छंट गई तो उन्होंने डाक्टर को सारा रहस्य बताया और दो-तीन दिन तक उसे वहीं रख उसका सामान्य उपचार करते रहने की सलाह दी।

मानसून के दिनों में कभी-कभी जंगल-झाड़ियों के बीच दो सांप रस्सी की तरह एक-दूसरे से लिपटे हुए मिलते हैं। यह सांपों की प्रजनन क्रिया है। एकबार इसी तरह हिरणमगरी में दो सांप लिपटे पाये गए। लोगों की खासी भी उन्हें दूर से देख रही थी। डॉ. त्यागी जब उधर से निकले तो उन्होंने अपने लिए अच्छा अवसर पाया। पहले तो दोनों सांपों को खूब मदमस्त होने दिया तत्पश्चात वे चुपचाप उनके पास गए और एक को पकड़ लिया।

वह मादा थी। उसे वे अपने घर ले गये। कुछ समय बाद उसने अंडे दिये। वे अंडे गोलाई में एक के बाद एक करके लड़ी के रूप में दिये गए। सभी अंडे लसीले पदार्थ से घिरे हुए थे और लाल बेर से थोड़े बड़े थे। ज्यों-ज्यों उन्हें हवा लगी वे बढ़ते गए। सर्पिणी अंडे देकर अलग जा बैठी। लगभग दो माह तक उन अंडों को प्रयोगशाला में उपयुक्त वातावरण में रखा गया। उसके बाद उनसे बच्चे निकले जो 8-10 सेंटीमीटर बड़े थे। सभी बड़े तेज भागने वाले तथा काटने का गुण लिए थे। सभी संख्या में कुल 33 थे। मैंने भी उन बच्चों को बड़ी नजदीक से देखा। सांपों से डॉ. त्यागी को इतना प्यार रहा कि उन्होंने अपनी लड़की का नाम भी 'नागमणि' रख दिया।

डॉ. त्यागी उत्तरप्रदेश के मुरादाबाद जिले के महमूदपुर गांव में 04 जुलाई 1944 को पैदा हुए। सांपों के उस्ताद कालबेलियों के भी ये उस्ताद हैं। सांप-नेवला की नकली लड़ाई तो कालबेलिया करवाते ही हैं पर डॉ. त्यागी ने कई बार इनकी असली लड़ाई देखी है। उन्होंने बताया कि इस लड़ाई में नेवला बड़ा चालाक होता है। जब-जब सांप उसे काटने को उद्यत होता है तब-तब वह अपनी पूंछ व कमर के बालों को खड़ा कर नेवला उसे धोखे में डाल देता है। इससे सांप उसके शरीर में विष प्रविष्ट करने में असमर्थ रहता है।

नेवला बड़ी चतुराई से सांप पर आक्रमण करता है। वह प्राय: जबड़ों के पीछे से उसके सिर को पकड़ने की कोशिश करता है। सिर पकड़ में आ जाने पर वह उसे अच्छी तरह घायल कर अपने बिल में घसीट ले जाता है। नेवला ही नहीं, मोर, उल्लू व चील भी सांप के बड़े दुश्मन हैं। मोर तो सांप को अपनी चोंच मार-मार कर ही घायल कर देता है। चील ऐसा झपट्टा मारती है कि कभी-कभी सांप अपने होश-हवास ही खो बैठता है।

सर्दी में डॉ. त्यागी को प्रत्येक सांप को धूप खिलानी पड़ती। आसपास के लोग अपने-अपने घरों के चूहे स्वत: ही वहां छोड़ जाते। सांपों से लाड़-लड़ाते हुए कभी-कभी डॉ. त्यागी सांपों को भी आपस में लड़ाया करते हैं। ऐसा करने पर एकबार एक सांप दूसरे सांप को निगल गया। सांप और डॉ. त्यागी दोनों जैसे पर्यायवाची नाम बन गये हैं। लोगबाग इन्हें सांप वाले डॉक्टर के नाम से ही अधिक जानते हैं।

डॉ. त्यागी सांपों के लिए प्रसिद्ध सांप सिद्ध भी हैं। सांप से काटे लोगों को बचाने तथा सांप से आमने-सामने होने में वे बड़ी से बड़ी जोखिम उठाने में सदैव तत्पर रहते हैं। जहरहीन सांपों ने तो उन्हें अनगिनत बार काटा है। वे सदैव अपने साथ 'फर्स्ट एड बॉक्स' रखते हैं और अपना इलाज आप कर लेते हैं।

04 फरवरी 2019 को उनके डोरेनगर निवास पर धूप में बड़ी देर डॉ. त्यागी से सांपों को लेकर बातचीत होती रही। मेरे साथ बिटिया डॉ. कहानी भी थी। डॉ. त्यागी ने बताया कि उन्होंने कुल 3746 सांप पाले। सभी जहरीले थे। यों तो सभी सांप उनके साथी की तरह ही उनके साथ रहे पर दो बार की घटनाएं ऐसी घटीं कि वे उन्हें भूल नहीं सकते।

उन्होंने बताया कि सन् 1978 के मई माह में वे रात को सोये हुए थे कि बिस्तर में ही एक कोबरे ने उन्हें काट लिया। वे तत्काल उठे। काटे हुए स्थान को दोनों ओर से कट्‌ठा बांध दिया पर वे किं कर्त्तव्य विमूढ़ से इधर-उधर डोलते रहे। विचित्र स्थिति में विचित्र अनुभूति लिए वे अपने वश में नहीं रहे पर 'तन डोले मन डोले' की हालत में बेचैनी लिए भटके-भटके खाते रहे और दो-एक घण्टे बाद ठीक हो गए। बोले, शायद उस सांप ने उन्हें पूरा नहीं काटा था। अधूरा काटने से जहर कम था सो बच गये अन्यथा उस दिन उनका मरण अवश्यंभावी था।

लेकिन दूसरी बार जो घटना घटी वह जानलेवा ही थी। यह घटना सन् 1979 की जन्माष्टमी की थी। सूरजपोल स्थित अस्थल आश्रम के महंत श्री मुरलीमनोहरशरण शास्त्री प्रतिवर्ष ही मन्दिर में जन्माष्टमी पर बड़ी आकर्षक झांकियां निकालते जिन्हें देखने पूरा शहर उमड़ पड़ता। डॉ. त्यागी पिछले तीन वर्ष से उस झांकी में अपने सांप को भी दिखाते रहे जो सर्वाधिक आकर्षण का सबब भी रहा।

इस बार वे संध्या को अपने घर पर एक नये कोबरे को उस झांकी के लिए ट्रेंड कर रहे थे। यह कोबरा अन्यों से अधिक सुन्दर था पर सीधा नहीं था सो उन्होंने उसे कुछ अधिक ही प्रताड़ित और परेशान किया। इस पर वह आक्रामक हो गया और आव देखा न ताव, गुस्सेल बन उछल पड़ा। डॉ. त्यागी कुर्सी पर बैठे हुए थे सो निश्चिंत भी थे पर उसने ऐसी लपक लगाई कि उनके दांये हाथ के अंगूठे के पास जोर से दंश मारा। उस दिन उनके मौन व्रत था। अस्पताल जाने में थोड़ी देर हो गई थी।

वहां डॉ. त्यागी ने पर्ची पर लिखकर डाक्टर को सारी दास्तान कह सुनाई और इलाज के लिए अपने सुझाव भी दिये। इस बीच पुस्तकालय से वह पुस्तक भी मंगवाई जिसमें उसके इलाज की प्रक्रिया दी गई थी। उसके अनुसार डाक्टर ने उनके पेट की चमड़ी ले दो माह तक उस घाव पर लगी रखने को कहा। इससे वह चिपक गई किन्तु दंश-स्थल पर उठा उभार सदैव के लिए रह गया। 'जान बची और लाखों पाये' जैसी अनहोनी की होनी का कमाल सबको खुशहाली दे गया। इस हादसे के दिन उनके वहां 40 सांप पल रहे थे।

डॉ. त्यागी के घर मैंने कई बार पिंजरे में पले सांपों के साथ उनके बच्चों को भी उछलते-कूदते-क्रीड़ा करते देखा है। बच्चे किसी के हों, सभी बड़े प्यारे, दुलारे, मोहक तथा अनमोल होते हैं। एकबार तो त्यागी साहब ने मुझे दिखाने के लिए कुछ सांपों को पिंजरे के बाहर निकाल उनके करतब भी दिखाये। एक सांप तो दीवार से करीब 6 फीट ऊंचा हो बार-बार मुझे भी मुदित किये रहा पर न जाने क्यों, सांप को देख आज भी मेरा डरपोक मन मेमना ही बना हुआ है।

डॉ. त्यागी का मानना है कि हमारे जैसे कृषि प्रधान देश के लिए तो सांप बड़ा ही उपयोगी प्राणी है। कई असाध्य रोगों के निदान में इस पर देश-विदेश में काफी शोध-प्रयोग हुए, हो रहे हैं। सांप इतना सीधा, सरल, समझदार और बेचारा जीव है कि मनुष्य की छाया तक से डरता है। मुसीबत का मारा या संकट आने पर ही सांप किसी को काटता है। अत: हमें चाहिए कि हम सांपों के प्रति निर्दयतापूर्ण व्यवहार त्याग कर उदार दृष्टिकोण अपनायें।

शब्द रंजन

उदयपुर, शुक्रवार 15 फरवरी 2019

सम्पादकीय

निज भाषा हिन्दी का गौरव

किसी भी राष्ट्र की अस्मिता उसकी जबान अर्थात् भाषा पर निर्भर है। भाषा के बिना कोई भी राष्ट्र गूंगा है। भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र ने तब ही इसका महत्व समझ लिया था जब हम अंग्रेजों के अधीन थे। 'निज भाषा उन्नति अहो सब उन्नति को मूल' कहकर उन्होंने सारे देशवासियों को अपनी भाषा के प्रति स्वाभिमान पूर्वक सजग कर दिया था। सच ही है, भाषा की उन्नति ही सब उन्नति का मूल है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी राष्ट्रभाषा हिन्दी के महत्व को कई जगह, कई बार उल्लेखित किया था। आजादी के दौर में भी स्कूलों में मुट्ठियां तान-तान कर छात्र नारे के रूप में प्रभावी पहचान देते कहते थे-

जिसको न निज भाषा तथा निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं, नर पशु निरा है, और मृतक समान है।।

तब से लोक में, भारतीय जनजीवन में हिन्दी का दबदबा निरन्तर बढ़ता जा रहा है और हिन्दी पूरे विश्व में अपनी पहचान देती बढ़ रही है।

भारत के लोग पूरे विश्व में बसे हुए हैं। वहां की भाषा से अपरिचित होने के कारण वे कई तरह की समस्याओं से जूझते रहे हैं। बिचौलियों द्वारा उन्हें कई प्रकार की परेशानियों का शिकार होना पड़ता है।

हिन्दी के पक्ष में यह अच्छी खबर है कि हाल ही में संयुक्त अरब अमीरात की सरकार ने हिन्दी को तीसरी अधिकृत भाषा के रूप में मान्यता दी है। वहां की एक करोड़ की आबादी में भारत के करीब छब्बीस लाख नागरिक हैं। इनमें अधिकांश लोग वहां की मान्य भाषा अंग्रेजी और अरबी से अपरिचित होने से कई तरह की समस्याओं से ग्रस्त हैं। हिन्दी को मान्यता देने से वहां कार्यरत भारतीय श्रमिक अनुबन्ध राशि और वेतन को लेकर किसी भी प्रकार की धोखाधड़ी होने से बचे रहेंगे।

यह भी कि अमीरात का लक्ष्य अपने यहां विश्व का सबसे बड़ा पर्यटन हब बनाने का है। वहां निर्माण कार्यों तथा तेल कम्पनियों में सर्वाधिक लोग भारतीय मूल के हैं। हिन्दी को मान्यता देने के पीछे अधिकाधिक दक्ष एवं कुशल भारतीय कामगारों को वहां जाने का अवसर मिलेगा और वे भाषा ज्ञान के अभाव में अब ठगे नहीं जायेंगे।

एक संगोठी हाल, बेहाल, विकराल पर

शासन-प्रशासन को यह अच्छी तरह समझना चाहिये कि रोजगार विहीन आर्थिक विकास निरर्थक है क्योंकि उससे अमीरी-गरीबी के बीच की खाई और अधिक चौड़ी होती जा रही है। सच पूछा जाय तो बेरोजगारी, बेकारी सरकार की प्राथमिकता में है ही नहीं। ये विचार जयपुर में मुक्त मंच द्वारा आयोजित संगोष्ठी में उभर कर आये। अध्यक्षता डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' ने की। अंग्रेजी साहित्यकार केवल खन्ना ने कहा कि मुद्रास्फीति, महंगाई और बेकारी हमने नहीं बढ़ाई किन्तु बर्दास्त हम सबको करना पड़ रहा है। डॉ. मंगल सोनगरा ने कहा कि हमें ग्राम स्वराज की ओर बढ़ना होगा। आर. एस. जाखड़ ने कुटीर उद्योग तथा कृषि पर ध्यान केन्द्रित करने का परामर्श दिया।

संयोजक श्रीकृष्ण शर्मा ने कहा कि बेकारी और बेरोजगारी दोनों अलग-अलग हैं। बेकारी की भयावहता का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि रेलवे में 93000 रिक्तियों के लिए पौने दो करोड़ प्रार्थियों ने आवेदन किया। इधर रोजगार सृजन के स्थान पर वेदान्ता समूह ने 49000, स्टील अॅथोरिटी ऑफ इण्डिया ने 30000, भारत संचार लिमिटेड ने 12000 तथा इण्डियन ऑयल कॉर्पोरेशन ने 11500 पदों को समाप्त कर दिया है।

अरूण ओझा ने कहा कि हमारे विकास की आधारशिला जब तक गांधीवादी अर्थव्यवस्था पर अधिकृत नहीं होगी, बेकारी को दूर करना सम्भव नहीं होगा। प्रो. मानचन्द खण्डेला ने श्रम उत्पादन के लिए पांच एल का सामंजस्य जरूरी बताया। संगोष्ठी में ए. आर. पठान, डॉ. पुष्पा गर्ग, गिरिराजसिंह कुशवाहा, एस. एम. धरेन्द्र, विष्णुलाल शर्मा, रमेशकुमार खण्डेलवाल, आर. सी. जैन तथा डॉ. सत्यनारायण सिंह ने संस्थागत और गैर संस्थागत क्षेत्रों में रोजगार वृद्धि के लिए रोजगारोन्मुख विकास पर बल दिया। धन्यवाद की रस्म राजेन्द्रकुमार शर्मा ने निभाई।

- प्रस्तोता- श्रीकृष्ण शर्मा

शादी का कार्ड

मैं घर के अन्दर पहुंचकर कुर्सी पर बैठ ही रहा था कि किसी ने आकर पैर छुए। लगता था वो मेरा पहुंचने का इंतजार ही कर रहा था। सर उठाकर दखा तो सामने सुहास को खड़े पाया। 'अरे सुहास कैसे हो? आओ बैठो।' मैंने पास की कुर्सी पर बैठने का इशारा करते हुए कहा। सुहास ने बिना किसी अभिवादन अथवा प्रत्युत्तर के सपाट लहजे में कहा, 'वीरेन्द्र भैया हम आपसे बहुत नाराज हैं।' 'क्या नाराजगी है भई? किस बात पर नाराज हो? बताओ अभी दूर कर देता हूं' मैने स्नेहपूर्वक कहा।

सुहास ने लट्ठ मारने के से अंदाज में कहा, 'आप बेटे की शादी में क्यों नहीं आए?' 'बस इतनी सी बात? अरे भई दूर का मामला है और कई बार छुट्टियां मिल जाएं तो टिकिट नहीं मिल पाता।' मैंने बात को रफा-दफा करने गरज से कहा। 'लेकिन यहां तो आप हर बार पहुंच ही जाते हो और न छुट्टियां मिलने में कोई परेशानी होती है और न टिकिट मिलने में ही कोई परेशानी होती है।' सुहास ने अत्यंत कटुतापूर्वक कहा।

सुहास मेरा कजिन है और यहां एक दूसरे कजिन की बेटी की शादी में पहुंचा था। सुहास की धृष्टता पर मुझे गुस्सा तो बहुत आ रहा था पर उसे दबाते हुए मैंने किंचित विनम्रतापूर्वक अपना पक्ष रखने का प्रयास किया, 'सुहास तुमने फोन तक'.....। मेरा वाक्य होने से पहले ही मेरी बात बीच में काटकर सुहास ने लड़ने के अंदाज में हाथ नचाते हुए कहा, 'फोन नहीं मिला तो क्या करूं कार्ड तो भेजा था। न आने के सौ बहाने।' हां बिट्टू की शादी का कार्ड हमें मिल गया था। शादी दस अप्रैल की थी और कार्ड हमें मिला तेरह अप्रैल को। मैंने देखा, सुहास का हास उसके मुंह से उतर चुका था।

- सीताराम गुप्ता

एडवोकेट आचार्य नहीं रहे

बीकानेर में एक नवम्बर 1936 को जन्मे जानेमाने एडवोकेट सच्चिदानन्द आचार्य का निधन हो गया। सामाजिक सरोकारों के प्रति प्रतिबद्ध श्री आचार्य हर दिल अजीज और खुशमिजाज इन्सान थे। वहां के

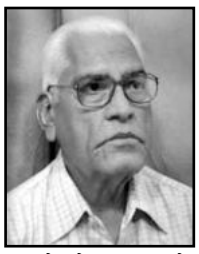

डूंगर कॉलेज में सन् 1957-58 के दौरान वे डॉ. महेन्द्र भानावत के सहपाठी रहे जिसका वे अन्त तक निर्वाह करते रहे। प्रारम्भ से ही वे बड़े होनहार एवं कुशाग्र बुद्धि के अध्येता रहे। अध्ययनकाल के दौरान साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में वे सदैव आगे रह अपनी हलचल दिये रहे। डॉ. सतीश मेहता ने बताया कि प्रबुद्ध एवं प्रज्ञावान पारिवारिक पृष्ठभूमि से संस्कारित होने के कारण सच्चिदानन्दजी ने अपने पिताश्री के नक्शे कदम पर चल यथेष्ट यश अर्जित किया और अब उनके सुपुत्र एडवोकेट शैलेन्द्र आचार्य उस विरासत को ध्वनित किए हुए हैं। वे अपने पीछे पत्नी अयोध्या देवी, दो पुत्र तथा तीन पुत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। शब्द रंजन की शोकांजलि।

जयपुर -कामाख्या ट्रेन का उदयपुर तक विस्तार

उदयपुर। रेल यात्रियों की सुविधाओं में विस्तार की कड़ी में 11 फरवरी को उदयपुर सिटी रेलवे स्टेशन पर जयपुर -कामाख्या-जयपुर कवि गुरु एक्सप्रेस का उदयपुर तक विस्तार एवं फुटओवर ब्रिज का शुभारंभ उदयपुर सांसद अर्जुनलाल मीणा तथा चित्तौड़गढ़ सांसद सी. पी. जोशी की गरिमामय उपस्थिति में किया गया। इस अवसर पर अपर मंडल रेल प्रबंधक सुनील अग्रवाल व मंडल वाणिज्य प्रबंधक हरफूलसिंह चौधरी भी उपस्थित थे। इस गाड़ी के उदयपुर तक विस्तार के फलस्वरूप उदयपुर, राणापताप नगर, मावली, चंदेरिया, भीलवाड़ा अजमेर व आसपास के रेल यात्रियों को कामाख्या और इस रेल मार्ग के अन्य स्टेशनों के लिए सीधी ट्रेन उपलब्ध हो गयी है।

श्यामप्रकाश देवपुरा सम्मानित

दिल्ली लायब्रेरी बोर्ड, दिल्ली (संस्कृति मंत्रालय,भारत सरकार) द्वारा आयोजित साहित्यकार/ पत्रिका संपादक सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि डॉ. महेश शर्मा (संस्कृति मंत्री,भारत सरकार) द्वारा साहित्य मंडल नाथद्वारा से प्रकाशित हरसिंगार पत्रिका के उत्कृष्ट संपादन के लिए श्यामप्रकाश देवपुरा का 75000 की राशि एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया।

कानोड़ मित्र मंडल द्वारा स्वास्थ्य परीक्षण

कानोड़ मित्र मंडल द्वारा 10 फरवरी को गुलाबबाग में निशुल्क मेडिकल चेकअप एवं मॉर्निंग वॉक कार्यक्रम आयोजित किया गया। मंडल के अध्यक्ष

हिमांशुराय नागौरी ने बताया कि कार्यक्रम में मेडीसीन विभाग के डॉ. संजीव बाबेल, आयुर्वेदाचार्य डॉ. कनक व्यास, होम्योपैथी के डॉ. अमित मेहता तथा फिजियोथेरेपिस्ट डॉ. विकास नलवाया, राजेन्द्र जोशी एवं टेक्नीशियन एस. एम. पोरवाल ने अपनी सेवाएं दी।

मंडल के महामंत्री दिलीप भानावत ने बताया कि प्रात: 7.30 बजे महापौर चंद्रसिंह कोठारी ने हरी झंडी दिखाकर मोर्निंग वॉक कार्यक्रम की शुरुआत की। इस अवसर पर स्वाइन फ्लू निरोधक दवा वितरण के साथ ही 250 सदस्यों की ब्लड शुगर, ब्लड प्रेशर आदि की जाँच की गई। इस अवसर पूनमचंद मेहता, डॉ. कनक उदावत, बी. एल. भानावत, सूरजमल नागौरी, सोहन भानावत, डॉ. तुक्तक भानावत, भगवती भाणावत, दौलतसिंह अलावत, तेजसिंह पोखरना, भगवती उदावत, गौतम नागौरी, महावीर भाणावत, विमला भानावत, चंद्रकला पोखरना, प्रो. मंजु नागौरी, मनोरमा भानावत, रंजना भानावत सहित कई गणमान्य कानोड़वासी उपस्थित थे।

एमबीबीएस के पांचवें बैच को हरी झंडी

उदयपुर। मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया (एमसीआई) की ओर से मेडिकल छात्रों को एक सौगात मिली है। एमसीआई ने पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पीआईएमएस) उमरड़ा में 150 सीटों के पांचवें बैच के लिए अकादमिक सत्र 2019-20 में प्रवेश की अनुमति प्रदान की है। इस आशय का पत्र पीआईएमएस के प्रिंसिपल को एमसीआई के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स की ओर से 6 फरवरी को जारी किया गया। बोर्ड ऑफ गवर्नर्स के सेक्रेटरी जनरल डॉ. संजय श्रीवास्तव ने पत्र में बताया कि पिछले वर्ष 9 और 10 अगस्त की असेसमेंट रिपोर्ट तथा बोर्ड की ओर से अपॉइंट की गई कमेटी की अनुशंसाओं के आधार पर यह निर्णय लिया गया।

उलझी ऊन सी यादों की उधेड़बुन

-मुक्तक भानावत-

यह नियति की छलना ही रही कि डॉ. महेन्द्र भानावत के आत्मज मुक्तक भानावत अल्पायु में ही काल कवलित हो गए। वे कुशाग्रबुद्धि के होनहार छात्र थे। अपने समय में उन्होंने कविता, निबन्ध तथा हास्य-व्यंग्य परक रचनाएं लिखीं जो छपीं भी। एक अप्रकाशित रचना यहां दी जा रही है।

यह तो हमारी किस्मत ही समझो कि हमारी पैदायशी ही मेरिट में रही। परिवार के पूरे दर्जन बच्चों में मैं ही टॉप पर रहा हूं। अंकल की चारों लड़कियां मुझसे छोटी थीं तो ताऊ के तीनों बच्चे भी और बुआ के तीनों लड़कों को तो मुझसे छोटा होना ही था। बच्चों की इस भीड़ में सबसे बड़ा होने के कारण मैंने ही सबको मारा-पीटा। शैतानी अव्वल दर्जे की कराई मगर कभी हम शैतानों की गिनती में नही आये।

यूं छोटे दर्जे की पढ़ाई में भी कम अव्वल नहीं रहे। आठवीं तक तो हमेशा स्कूल में फर्स्ट आते रहे। गणित में तो सेन्ट परसेन्ट नम्बर के बिना बात ही नहीं करते। फर्राटे की इंग्लिश बोलते और लिखते थे। हिन्दी में भी हमारी कम मास्टरी नहीं थी। मास्टरजी पढ़ाते तो हम सवाल-जवाब ऐसे करते कि कभी-कभी मास्टरजी की मेरिट ही हमारे सामने हिलती नजर आती लेकिन मास्टरजी तो मास्टरजी थे, हम कहां उनकी बराबरी कर पाते। सारे विषयों की मेरिट हमने हथिया रखी थी, इसलिए गुरुजी कभी-कभी हमें 'मिस्टर मेरिट' कहकर पुकारते थे।

एक दिन बसंत पंचमी को स्कूल का फंक्शन रखा गया जिसमें एक दूसरे स्कूल के बड़े मास्टरजी को मुख्य अतिथि बनाया गया। उन मास्टरजी ने अपने भाषण में कहा कि जो बच्चे अच्छे पढ़ते हैं और मेरिट में आते हैं उन्हें चाहिए कि वे आगे खूब पढ़ाई करें। असली मेरिट तो यहां की पढ़ाई के बाद शुरू होती है। हमारी समझ में उसी दिन यह आया कि हम जो अब तक मेरिट में आते रहे वह तो घर की मेरिट है। असली मेरिट तो आगे की पढ़ाई में है।

टेन्थ का रिजल्ट आया तो हमने हमारा रोल नम्बर फर्स्ट डिवीजन में पाया। उसी पेपर में मेरिट वालों के फोटो देखे तो हमने भी मेरिट में आने की सोची। बस उसी दिन से जम गये पढ़ाई में। क्या दिन और रात, हमें किसी का पता ही नहीं रहता। डेट तक याद नहीं रहती। खाना खाया तो ठीक, न खाया तो ठीक। बस हरदम पढ़ते रहते। किसी पार्टी-वार्टी में भी नहीं जाते। सगे संबंधी याद कर-करके थक गये पर किसी को मुंह तक नहीं दिखाया। बस एक ही धुन सवार थी मेरिट में आने की। महीने पर महीने बीत गये। हमारी पढ़ाई फर्राटे से चल रही थी।

परीक्षा हो गई। रिजल्ट आया तो सुखद समाचार मिला। हमने हमारा नाम मेरिट में सबसे नीचे पाया। विशेषता यह रही कि पूरे संभाग से हम ही मेरिट में आये। लोगों ने हमारा इन्टरव्यू अखबारों में पढ़ा। रेड़ियो पर भी सुना और टी.वी.पर देखा। सब ओर से बधाइयां आने लगीं। चारों तरफ हमारी वाह-वाही होने लगी। मित्र, सगे-संबंधियों के साथ मिठाई का दौर चला तो पूरे सप्ताह तक चलता ही रहा। घर में दादी ने कहा कि कई पीढ़ियों में ऐसा अव्वल पढ़ाई में कोई नहीं आया।

अब हम कॉलेज में आ गये। बारहवीं कक्षा के विद्यार्थी। डट कर वापस इस क्लास की तैयारी में जुट गये। टीचर्स लोग घर बुला-बुला कर हमारा कोर्स पहले ही खत्म करवाने में लग हुए थे। दो-एक महीने बाद बोर्ड से मुझे एक लेटर मिला जिसमें मेरिट में हमारी जगह कोई श्यामलाल आया लिखा था और हमारा नाम उस पूरी सूची से गायब था। इस पत्र को पढ़ते ही हमें लगा जैसे धरती ही हमारे पांवों से खिसकती चली जा रही है और हम त्रिशंकु की तरह हवा में डोल रहे हैं। हमारा मुंह बताना मुश्किल हो गया। हुआ यह कि श्यामलाल शुरू से ही पढ़ने में चेटकबाज था। मेरिट में आने का सपना तो वह शुरू से ही लिये हुए था परन्तु आ नहीं पाया। उसके आत्मविश्वास ने जोर मारा तो उसने कॉपियां जंचवाई और कॉपियों ने जोर मारा तो उसकी किस्मत ने पलटा खाया। लिहाजा हमारी किस्मत व्हाइट से डार्क में जा गिरी और उसकी किस्मत डार्क से उछल कर व्हाइट में आ पड़ी।

हमारा दिमाग खराब हुआ तो ऐसा हुआ कि पढ़ाई से विश्वास जा उठा। मगर पढ़ाई को हमने जरा भी नहीं छोड़ा। पढ़ते-पढ़ते एक दिन हमारे दिमाग में यह आया कि पढ़ाई से ज्यादा हम खेल में अपना सितारा बुलन्द कर सकते हैं। सो हमने खेलना शुरू किया। किस्मत ने साथ दिया तो दिमाग की तरह हमारी टांगें भी तेज दौड़ने लगीं। कॉलेज लेवल पर तो दौड़ में हम हमेशा ही फर्स्ट आये। इंटर यूनिवर्सिटी में तीन टांग की दौड़ में एक बार जाना पड़ा।

मैं और मेरा साथी एकदम तैयारी के साथ नियत दिन और समय पर यथा स्थान पहुंचे। प्रोपर कंडीशन में हम दोनों तैयार। सिटी बजी कि हमने फर्राटे से डग भरने शुरू किये और हवा की तरह उड़ने लगे। सबसे आगे हम ही हम थे। बहुत पीछे तक कोई नजर नहीं आ रहा था। लोगों ने तालियां बजा-बजा कर हमारा उत्साहवर्धन किया। इतने में हमारी किस्मत की एक इंच मुस्कान कम पड़ती नजर आई। हम गन्तव्य तक पहुंचने ही वाले थे कि पांव की रस्सी ढीली पड़ने लगी। इससे हमारे पांवों का तालमेल बिगड़ा और साथी गिर पड़ा। मैं अवाक् खड़ा रह गया और उसकी बांह पकड़ उसको उठाने लगा। इतने में हवा के तेज झोंके की तरह पीछे आ रहे पार्टिसिपेन्ट्स आगे निकल गये। यहां भी हमारी मेरिट बनते-बनते बिगड़ी कि हम न घर के रहे न घाट के।

हमारा विचार फिर बदला। मन को समझाया-रे मन! तेरा भाग्य तो पढ़ाई से ही खुलने वाला है। इन खेलों-वेलों में तो पी. टी. उषा की ही सब मेरिट लिखी है। सो फिर से पढ़ाई की ओर मुखातिब हुए। प्रतिदिन आलती-पालथी मार कर योगासन की मुद्रा में बैठ जाते और खिड़कियों सहित कमरा बंद कर अपना सारा ध्यान किताबी कीड़े में लगा देते। बीच-बीच में झपकी लगती तो आंखों को पानी छिड़क देते। एक बार तो दृढ़ निश्चय किया कि रात भर जागेंगे। सो खोपड़ी को खूंटी से बांध दिया। यूं करते-करते रात तो निकल गई मगर जो कुछ याद रहना था वह सब भूल गये और केवल खूंटी और खोपड़ी ही दिमाग में घूमती रही।

मेरिट में आने के चक्कर में हमने हनुमानजी को कई रोट चढ़ाए और उनकी सिन्दूरी मली को बालों में मोम की तरह चिपकाए रखा। 'जय हनुमान ज्ञान गुन सागर' ने हमारे किताबी ज्ञान को परीक्षा के सागर में कई बार डुबकियां खिलाई। इससे हुआ यह कि हम सेमेस्टर में तो मेरिट ही लाते रहे पर सालाना परीक्षा में हमारी नाव कभी किनारे नहीं लगी।

इस बीच हमारी मुलाकात एक ज्योतिषी से हो गई। उसने हमारा हाथ देखा लिया तो हमें लगा कि यह हमारा सही भविष्य दे रहा है तो हमने अपने हाथों के साथ अपना पांव भी बता दिया। दोनों को मिलाकर उसने निष्कर्ष दिया कि हम भाषाणबाजी में अपना कमाल दिखा सकते हैं। लिहाजा राष्ट्रीय स्तर की एक ऐसी ही प्रतियोगिता तीन दौर से गुजरने वाली थी। पहले दो दौर में हमने ने अपना तुर्रा दिया। जब दो दौर में हमारा सिक्का उछला तो तीसरे दौर में कौन मांई का लाल हमसे बाजी मार सकता था। तीसरा दौर ज्योंही प्रारम्भ हुआ। उसमें सबकी आंखों में हम ही हम चढ़े हुए थे।

हम अपने फुल कोन्फिडेन्श में थे। श्रोता भी हमारे कान्फिडेन्श को मान्यता देने वाले थे। इसलिए हमारे पक्ष में पूरा हॉल तालियों से गड़गड़ाता रहा। मगर एक क्षण ऐसा आया कि हमारा धारा प्रवाह बोलना अवरूद्ध हो गया। हमें लगा जैसे कोई लकवा मार गया है। हम सब कुछ भूल गये । विषय-वस्तु सब एव-मस्तु हो गये। कभी हम अपनी खोपड़ी को खुजलाते रहे तो कभी बिचारे मुंह पर हाथ फिराते रहे मगर वहां कौन हमारी नानी थी जो हमारी ऐसी तैसी होने पर भी हमें प्यार से बुचारती। इतने में श्रोताओं में से कइयों ने सीटियां देनी शुरू की तो कइयों ने लगातार तालियों की बौछारें दी। कुछ नमकीन किस्म के छोरों ने हमें फब्तियां दी और कहा-बैठ जा बच्चू, तेरी मेरिट तो पक्की है। मरता क्या न करता। हमारे हाथ में न हम रहे न माइक रहा।

ऐसे ही एक यूनिवर्सिटी के यूथ फेस्टिवल में सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान मेरिट ने हमारे भाग्य को भस्मीभूत कर दिया। हमने तब एक ईरानी स्त्री का स्वांग प्रस्तुत किया था। मेकअप, साज-सज्जा, प्रस्तुतिकरण आदि सभी दृष्टियों से हमारा दर्जा अव्वल रहा। हमारे आत्मविश्वास ने भी हमारी मेरिट पक्की कर दी मगर आखरी टेम जब सलाम की मुद्रा में दर्शकों से विदा ले रहे थे तो पता नहीं कैसे हमारे घाघरे का नाड़ा खुल गया जिससे हम हंसी के पात्र तो पर्याप्त बने मगर हमारी मेरिट में हम दाल भात में मूसलचंद बन कर रह गये। कई लोगों ने और यहां तक कि निर्णायकों ने भी बाद में कहा कि अगर अंत की वह घटना नहीं घटती तो हमारी मेरिट पक्की थी।

जीवन के कितने ही क्षण, अवसर और आसार सुनहरे बन कर हमारे भाल चमके मगर भाग्य तो अंदर लिखा रहता है जिसे कोई पढ़ नहीं सकता। दिखते हुए हमारे सारे प्रयास सफल होते रहे मगर हर समय आखरी क्षण ही हमसे अबोला होकर न जाने क्यों रूठता रहा। अपने छोटे से जीवन के पचासों घटना संस्मरण को लेकर जब मैं सोचता हूं तो अंत में बार-बार यही कहने को विवश होता हूं कि यह न हमारी किस्मत में बदा था कि हम मेरिट में आ जाते।

वेलेंटाइन पर एक हजार से ज्यादा विशेष प्रकार के डस्टबीन वितरित

उदयपुर। उदयपुर से बेइंतेहां मुहब्बत करने वाले कुछ संगठनों ने साथ मिलकर 14 फरवरी को वेलेटाइन डे पर शहर को स्वच्छ, साफ और सुंदर बनाने के लिए बहुत ही खास पहल की है। इसके तहत विशेष प्रकार के डस्टबीन बांटकर क्लिन सिटी का संदेश दिया गया।

बिग एफ एम एवं लायंस क्लब उदयपुर महाराणा द्वारा आयोजित इस अभियान की शुरूआत मेयर चंद्रसिंह कोठारी और लॉयंस क्लब उदयपुर महाराणा के रीना राठौड़, राजेश शर्मा, अशोक माण्डावत, अशोक जैन, रवि मूंदड़ा, डोली तलदार, सुरेश माली एवं भूपेन्द्र कालरा ने की। इस खास पहल की थीम 'अपने शहर से प्यार करके तो देखो' थी जिसमें लायंस क्लब उदयपुर महाराणा, फाक्स वेगन राजेश मोटर्स, मूंदड़ा बिल्डर्स, पर्ल सुजुकी सहित कई संगठनों की ओर से विशेष रूप से तैयार करवाए गए डस्टबीन बांटे गए।

अयोजकों के अनुसार शहर में एक हजार से अधिक डस्टबीन बांटे गए। हार्ड प्लास्टिक से बने इन खास डस्टबीन को ऐसे डिजाइन किया गया है कि ये कारों में ग्लास होल्डर में आसानी से फिक्स हो गए जिनमें गीला और सूखा कचरा दोनों डाला जा सकेगा।

इस विशेष अभियान का मकसद कारों के माध्यम से सड़कों पर फैलने वाले कचरे को रोकना है। इस दिन फतहसागर, सूरजपोल, दुर्गा नर्सरी रोड़, देहलीगेट सहित कॉरपोरेट ऑफिसेज में यह अभियान चलाया गया। गौरतलब है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्वच्छ भारत अभियान के तहत इस प्रकार के छोटे डस्टबीन को प्रमोट किया गया है।

निवेश हमेशा लोंग टर्म का करें : मेहता

उदयपुर। हमेशा निवेश शोर्ट टर्म में नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे नुकसान की संभावनाएं अधिक रहती है। निवेश करना है तो हमेशा लोंग टर्म का और रेगुलर करना चाहिए जिसमें नुकसान की संभावनाएं नहीं रहती है। इसके साथ ही निवेशक जिस कंपनी में निवेश करने जा रहा है, उसे कम से कम उस कंपनी का पांच साल का ट्रेक रिकॉर्ड भी जांच लेना चाहिये। यह बात प्रेसवार्ता में कोटक म्यूचुअल फंड के हेड- सेल्स ऐंड मार्केटिंग मनीष मेहता ने कही।

मनीष मेहता ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों के दौरान निवेशकों के बीच म्यूचुअल फंड एक लोकपिय निवेश साधन के तौर पर उभरा है।

पिछले एक साल में म्यूचुअल फंड उद्योग ने एयूएम में शानदार बढ़ोतरी देखी है। विभिन्न इक्विटी और फिक्स्ड इन्कम योजनाओं में पूँजी का प्रवाह लगातार बना हुआ है। सिस्टेमैटिक इनवेस्टमेंट प्लान (सिप) इक्विटी योजनाओं में निवेश के प्रमुख वाहक बने हुए हैं। लगातार बढ़ती जागरूकता, व्यवस्थित निवेश के लाभों के बारे में जानकारी, अनुशासित नजरिये और कॉस्ट एवरेजिंग की वजह से सिप बुक में बढ़ोतरी दर्ज हो रही है। हमें उम्मीद है कि यह रुझान जारी रहेगा। आने वाले आम चुनावों की वजह से बाजार में उतार-चढ़ाव आ सकता है, लेकिन ये कुछ ऐसे वक्त आते हैं जब इक्विटी आवंटन में बढ़ोतरी करने से लंबी अवधि में बेहतर प्रतिफल (रिटर्न)हासिल करने में मदद कर सकती है।

उन्होंने कहा कि कोटक एसेट मैनेजमेंट कंपनी लि. (कोटक म्यूचुअल फंड) ने दिसंबर 2018 में अपने काम-काज के दो दशक पूरे कर लिये हैं। फंड हाउस के लिए मौजूदा वित्त वर्ष काफी उत्साहजनक रहा है। यह फंड हाउस राजस्थान में विभिन्न वितरण नेटवर्क के जरिये तेजी से अपना विस्तार कर रहा है।

रघुपति सिंघानिया को लाईफ टाईम एचीवमेंट अवार्ड

उदयपुर। औद्योगिक, व्यावसायिक, सामाजिक एवं जनसेवा से जुड़ी गतिविधियों में उल्लेखनीय योगदान के लिए यूसीसीआई लाईफ टाईम एचीवमेंट अवार्ड जे. के. टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज के चैयरमेन रघुपति सिंघानिया को प्रदान किया गया। यूसीसीआई अध्यक्ष हंसराज चौधरी ने श्री सिंघानिया का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कर यह सम्मान प्रदान किया।

रघुपति सिंघानिया ने इस सम्मान को जेके संगठन से जुड़े 30 हजार अधिकारियों एवं कार्मिकों को समर्पित करते हुए कहा कि उनके उत्कृष्ट कार्य के कारण वे यह सम्मान प्राप्त कर रहे हैं। श्री सिंघानिया ने अपने व्यावसायिक अनुभव साझा करते हुए यूसीसीआई सदस्यों से समय के अनुरूप स्वयं के व्यवसाय को ढालने एवं विश्वस्तरीय तकनीक अपनाने पर बल दिया। इस अवसर पर जे के टायर एण्ड इण्डस्ट्री द्वारा किये गये उल्लेखनीय कार्यों पर लघु चलचित्र का प्रदर्शन भी किया गया।

रेजोनेंस के छात्रों का उत्कृष्ट प्रदर्शन

उदयपुर। जियोलाजिकल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया द्वारा आयोजित इंटरनेशनल अर्थ साइंस ओलिंपियाड (आईईएसओ) परीक्षा के प्रथम चरण के परिणाम में रेजोनेंस उदयपुर के छात्र अंशुल चौधरी ने राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम एवं कोमल गुप्ता ने राज्य स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया है। देशभर से चयनित कुल 38 विद्यार्थियों में से 11 विद्यार्थी रेजोनेंस के हैं। इसमें अंशुल चौधरी (रैंक -1), टीस्ता सोलंकी (रैंक-12), भावेश मालवीय (रैंक-18), उद्धव जैन (रैंक-21), हिमांक बोहरा (रैंक-31) एवं साकेत अग्रवाल (रैंक-31) उदयपुर स्थित अध्ययन केंद्र के नियमित विद्यार्थी है।

रेजोनेंस के उपाध्यक्ष आयुष गोयल ने बच्चों को सलाह देते हुए कहा कि वह सफलता पर अति उत्साही न हो और असफलता पर ज्यादा विचलित न हों। कई बार कड़ी मेहनत के बाद भी बच्चों को सफलता नहीं मिलती है लेकिन इससे उन्हें यह नहीं समझना चाहिए कि उनका जीवन खत्म हो गया है। अंशुल चौधरी और कोमल गुप्ता ने अपनी सफलता का श्रेय माता-पिता एवं गुरुओं को दिया। प्रबंध निदेशक आर. के. वर्मा ने विद्यार्थियों को उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए शुभकामनाए देते हुए अगले चरण के लिए अग्रिम शुभकामनाए दी और बताया कि सभी चयनित विद्यार्थी द्वितीय चरण के लिए मई माह में बंगलुरु में तीन सप्ताह के कैंप में भाग लेंगे, जिसके अंत में 4 विद्यार्थी चयनित होंगे जो साउथ कोरिया में देश का प्रतिनिधित्व करेंगे।

गीतांजली हॉस्पिटल सम्मानित

उदयपुर। गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकाड्र्स कार्यक्रम में सहयोग पर गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल को सम्मानित किया गया। सितंबर 2018 में गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के रिसर्च आधारित कार्यक्रम में एक घंटे के भीतर 530 लोगों की ब्लड प्रेशर स्क्रीनिंग की गई थी। जनरल मेडिसिन विभागाध्यक्ष डॉ. डी. सी. कुमावत और डॉ. एप्पल गांधी के निर्देशन में हुए कार्यक्रम में हॉस्पिटल के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. नरेंद्र मोगरा ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

ओटीटी प्लेटफॉर्म 'शेमारूमी' लॉन्च

उदयपुर। शेमारू एन्ट रटेनमेंट लि. ने बॉलीवुड अभिनेता टाइगर श्रॉफ की उपस्थिति में अपना ओवर द टॉप प्लेरटफॉर्म 'शेमारूमी' लॉन्च किया। शेमारूमी भारतीय बाजार के लिये एक समग्र एप्प है, जिसके द्वारा सभी उम्र वर्ग के लोगों के लिये बॉलीवुड, गुजराती, डिवोशन, पंजाबी और किड्स में भारतीय वीडियो कंटेंट की तलाश करने वाले दर्शकों के लिये विविधतापूर्ण एवं एक्सिक्लूसिव कंटेंट की पेशकश की जाती है।

शेमारू एन्टरटेनमेंट के सीईओ हिरेन गड़ा ने कहा कि शेमारू के लिये यह एक बड़ी छलांग है। एक कंपनी के रूप में हमने हमेशा ही भारतीय दर्शकों की नब्ज को समझा है और हमारा इतिहास इसका प्रमाण है। बॉलीवुड- क्लासिक और कंटेम्पपरी, दोनों ही हमारी मूल ताकत हैं और हमारा उद्देश्यय कम सेवा वाले ग्राहकों के लिए एक समृद्ध एवं विविधतापूर्ण कंटेंट की पेशकश करना है।

अपनी आंखों से दुनिया देखेगा मुकेश

उदयपुर। जन्म से ही आंखों की रोशनी से वंचित मुकेश (16) दूसरे ऑपरेशन के बाद अपनी आंखों से दुनिया देख सकेगा। डॉक्टर के इस आश्वासन के बाद नारायण सेवा संस्थान ने ऑपरेशन का खर्च वहन करने का जिम्मा उठाया है। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि जन्मजात प्रज्ञाचक्षु होने से चितौड़गढ़ निवासी इस बालक का नाना-नानी ने पालन-पोषण किया। बाद में मुकेश को नारायण सेवा संस्थान ने पढ़ाई के लिए गोद लिया। यहां पढ़ने के दौरान उसकी आंखों का एक ऑपरेशन भी कराया गया जिसमें ऑपरेशन के लिए 31000 रुपये की मदद की गई थी। इस दूसरे ऑपरेशन के लिए डॉक्टरों को 16000 रूपये की राशि उपलब्ध कराई गई है।

जिंक प्रोजेक्ट डवलपमेंट इनोवेशन ऑफ द ईयर अवार्ड

उदयपुर। हिन्दुस्तान जिंक को रि-एसेटस इण्डिया 2019 कॉन्फ्रेंस एक्सपो अवार्ड के नवें वार्षिक संस्करण में 22 मेगावाट आगुचा सोलर प्रोजक्ट के लिए 'प्रोजक्ट डवलपमेंट इनोवेशन ऑफ द ईयर अवार्ड' न्यू एण्ड रिन्वेबल एनर्जी मंत्रालय के सलाहकार सोहेल अख्तर एवं इण्डियन विण्ड टर्बाइन मैन्यूफैक्चरर्स एसोसिएशन के एसोसिएट डायरेक्टर ओ.पी. तनेजा ने जिंक के उप-प्रबन्धक (रिन्वेबल पॉवर प्रोजेक्ट) विष्णु खण्डेलवाल को प्रदान किया।

यह परियोजना आगुचा में वेस्ट डंप यार्ड पर स्थापित की गई है, जिसका उपयोग वृक्षारोपण या किसी भी मेजर स्ट्रक्चर के लिए नहीं किया जा सकता है। हिन्दुस्तान ज़िंक ने इस चुनौती को मैसर्स महिंद्रा सस्टेनेबल की साझेदारी में अभिनव डिज़ाइन इंजीनियरिंग से वेस्ट डंप यार्ड क्षेत्र का उपयोग करके पर्यावरण की सुरक्षा के लिए ज़ीरो उत्सर्जन के साथ 22 मेगावाट का बिजली संयंत्र सफलतापूर्वक स्थापित किया। इस परियोजना से प्रतिवर्ष 45000 टन के कार्बन उत्सर्जन को कम करने में भी मदद करेगी।

ट्रैक्टर प्रो 6055 की पेशकश

उदयपुर। वीई कमर्शियल व्हीकल्स लि. के अग्रणी भाग आयशर ट्रक्स और बसेंस ने राजस्थान में अपने ट्रैक्टर शो आयशर प्रो विस्तार के दौरान अपने नये ट्रैक्टर आयशर प्रो 6055 को प्रस्तुत किया है। तकनीकी रूप से सुदृढ़ आयशर प्रो 6055 भारत का पहला 55 टन जीसीडब्ल्यू श्रेणी का ट्रैक्टर है जो उत्पादकता और ईंधन दक्षता में नये मानक स्थापित करने की क्षमता रखता है। आयशर के द्वारा उभरते हुये मिड प्रिमीयम सैगमेंट, जोकि हाई पावर और टॉर्क कॉम्बीनेशन के साथ उच्च श्रेणी के रिफाईनमेंट और सॉफ्स्टीकेशन के लिये जाना जाता है, में पूर्व से ही प्रचलित प्रो 8049 को स्थापित किया है। आयशर ट्रक्स एंड बसेंस के एक्जीक्यूटिव वाइस प्रेसीडेंट एएस रामा राव ने कहा कि सरकार द्वारा हैवी ड्यूटी व्हीकल्स के संबंध में प्रस्तुत किये गये एक्सल लोड संबंधी नये नियमों के अनुसार, आयशर द्वारा ट्रांसप्रोस्टर्स की आवश्यकताओं के अनुरूप उच्च तकनीक और क्षमता को श्रेष्ठ सुरक्षा मानकों के साथ कम मालिकाना लागत पर उपलब्ध करायी जा रही है। हमारी नये ट्रेक्टर रैंज ने क्षमता और उपभोक्ता को लाभ प्राप्ति के क्षेत्र में नये मानक स्थापित किये है।

एरियल का अवार्ड विनिंग मूवमेंट शेयर द लोड

उदयपुर। अपने अवार्ड विनिंग मूवमेंट शेयर द लोड के जरिए वर्ष 2015 से एरियल घरों के भीतर असमानता की वास्तविकता का पता लगा रहा है। एरियल ने भारत में लिंग असमानता की व्यापकता और बेटों से भार बाँटने की आवश्यकता पर चर्चा की। इस परिचर्चा में 100 से अधिक मम्मी ब्लॉगर्स और मीडिया की उपस्थिति रही। इस पैनल में शामिल अभिनेता राजकुमार राव, पत्रलेखा, निर्देशक गौरी शिंदे, बीबीडीओ हेड जोसी पॉल, पी एंड जी इंडिया की विपणन निदेशक सोनाली धवन ने घरों के भीतर असमानता पर सुखद बातचीत के साथ ही अपने व्यक्तिगत अनुभवों को भी साझा किया।

उन्होंने कहा कि आज के बदलते समय में ज्यादातर पुरुष पहले से कहीं ज्यादा बोझ साझा कर रहे हैं, इसके बावजूद हम समानता के आदर्श स्तर से काफी आगे चल रहे हैं।

रेंज रोवर वेलार एसवीऑटोबायोग्राफी डायनैमिक

उदयपुर। लैंड रोवर ने लिमिटेड रन रेंज रोवर वेलार एसवीऑटोबायोग्राफी डायनैमिक एडिशन पेश करते हुए दुनिया की सबसे खूबसूरत मिड-साइज एसयूवी को और अधिक परफॉर्मेंस, लक्जरी और एक्सक्लूसिविटी प्रदान की है। वेलार लाइन-अप के सर्वोच्च शिखर के रूप में डिजाइन किया गया यह नया मॉडल लैंड रोवर स्पेशल व्हीकल ऑपरेशंस द्वारा विकसित है। कई अनूठे डिजाइन एनहैंसमेंट के साथ, यह मॉडल 404 किलोवॉट 5.0 लीटर वी8 सुपरचार्ज्ड इंजन की ताकत से लैस है। इसकी एक्सक्लूसिविटी को और बढ़ाते हुए, यह विशिष्ट मॉडल खरीदारी के लिए सिर्फ एक साल तक ही उपलब्ध होगा।

लैंड रोवर स्पेशल व्हीकल ऑपरेशंस के मैनेजिंग डायरेक्टर माइकल वैन डेर सैंडे ने कहा कि 2018 के वर्ल्ड कार अवार्ड्स में वेलार को वर्ल्ड कार डिजाइन ऑफ द ईयर नामित किया गया था और 2017 में रेंज रोवर एसवीऑटोबायोग्राफी डायनैमिक पेश किए जाने के बाद से यह इस प्रतिष्ठित बैज को धारण करने वाला रेंज रोवर परिवार का दूसरा मॉडल है। सुपरचार्ज्ड वी8 इंजन से युक्त सबसे दमदार वेलार महज 4.5 सेकंड में 0 से 100 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार पकड़ लेती है (0-96 किमी/घंटा 4.3 सेकंड में और 274 किमी/घंटा की रफ्तार से दौड़ने में सक्षम है, जबकि हवा से बातें करने के दौरान भी कस्टमर रेंज रोवर के पारंपरिक सुकून और आराम में होता है। लैंड रोवर के मुख्य डिजाइन अधिकारी, गैरी मैक्गवर्न ने कहा कि हमारे द्वारा लगातार किया जाने वाला विकास ऐसे अत्यधिक वांछनीय वाहनों के निर्माण पर निरंतर फोकस से प्रेरित है, जिनसे हमारे ग्राहक हमेशा प्यार करेंगे।

व्यंग्य नाटक 'टेढ़ी-टेढ़ी चाल' का लोकार्पण

पिछले दिनों हरमन चौहान लिखित व्यंग्य नाटक 'टेढ़ी-टेढ़ी चाल' पुस्तक का युगधारा संस्था द्वारा आयोजित समारोह में लोकार्पण किया गया। समारोह अध्यक्ष डॉ. इन्दुशेखर तत्पुरुष, मुख्य अतिथि डॉ. देव कोठारी, विशिष्ट अतिथि डॉ. एस. एस. सारंगदेवोत तथा डॉ. के. एल. कोठारी थे। डॉ. देवेन्द्र 'इन्द्रेश' एवं डॉ. तरुण दाधीच ने समीक्षा पत्र पढ़ा।

लोकार्पण करते लालदास 'पर्जन्य', हरमन चौहान, एस. एस. सारंगदेवोत, डॉ. देव कोठारी, के. एल. कोठारी, डॉ. देवेन्द्र 'इन्द्रेश', एवं डॉ. तरुण दाधीच।

-प्रस्तुति- मधुलिका सिंह

चट मंगनी पट ब्याह

सांस्कृतिक स्त्रोत शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान (सीसीआरटी), नई दिल्ली के उदयपुर केन्द्र में 7 फरवरी 2019 को देश के विभिन्न अंचलों के शिक्षकों की उपस्थिति में डॉ. महेन्द्र भानावत ने राजस्थान की लोककलाएं विषय पर व्याख्यान दिया। इस अवसर पर कोलापुर-महाराष्ट्र के गांव सिरो के पाण्डुरंग तथा पेठ वड़गांव के धनाजी लहू करोड द्वारा बनाये गये डॉ. भानावत के रेखाचित्र।

खोज-खबर

संवत् 1764 में मूर्खों के 84 प्रकार

लोगों की सोच और समझ को भी दाद देनी होगी। कैसे-कैसे लोग हैं जो कुछ-न-कुछ ऐसा कार्य करते रहते हैं जो अन्यों को सीख दे और जीवन में सार्थक सक्रियता दे। ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो कामचोर बैठे ठाले कुछ-न-कुछ बेमतलब का खीलाफांदा करते स्वयं तो परेशान होते या न भी होते हों पर उनसे अन्य तो परेशान होते ही हैं।

कौन ऐसा प्राणी है जिसने अपने जीवन में कोई मूर्खता नहीं की हो। दूसरी ओर कौन ऐसा प्राणी है जो मूर्ख बनना नहीं चाहेगा। वर्ष में एकाध बार ही सही, मूर्ख बनकर हर व्यक्ति प्रसन्नता का अनुभव करता है। इसके लिए त्यौहार भी होली का चयन किया गया। कोई मूर्ख बनाये या नहीं भी बनाये तो व्यक्ति स्वयं ही अपने को मूर्ख बनाकर अति संतुष्ट होता भी देखा गया है।

ऐसे आयोजन भी होने लग गये हैं जब कुछ लोग मिलकर किसी विशिष्ट व्यक्ति को अपने बीच सम्मानित कर मूर्ख-महामूर्ख बनने का खिताब देते हैं। मूर्खों के लिए जो सवारी खोजी गई है वह भी गधा नामक प्राणी है। होली पर ऐसे कई मनचले गधे की सवारी करते-कराते देखने को सहज आसानी से मिल जाते हैं।

गधे की बात चल पड़ी तो यही ऐसा प्राणी है जो अपने से अधिक हैसियत का भार ढोने में राजी रहता है। मूर्ख व्यक्ति को आम बोलचाल में गधे का सम्बोधन देने की जैसे रीति ही चली आ रही है। भाई लोगों ने तो गधे पर पुराण भी लिख दिया है।

वैसे किसी को सजा देने के लिए गधे की सवारी कराकर सार्वजनिक रूप में जुलूस निकाला जाता है। अधिक दण्ड देने के लिए उसका मुंह काला कर दिया जाता है और सिर के पहनावे में नीम की उल्टी लटकती डालियां लगा दी जाती हैं। फटे-पुराने कपड़े पहनाकर कभी-कभी गधे पर उल्टा बिठा दिया जाता है। शासक की ओर से सजा देने पर भी ऐसी ही दुर्गति की जाती है।

उदयपुर में महाराणा द्वारा दंडित करने पर अपराधी को समग्र रूप से काले कपड़े पहनाये जाते, काला मुंह कर कालिख पोत दी जाती, सिर के बाल भदर कर दिये जाते, दाढ़ी-मूंछ सफाचट कर गधे पर उल्टी सवारी करा सदैव के लिए राज्य से बाहर कर दिया जाता था। यह सजा देने के लिए उसे शहरकोट से लगी दण्डपोल से बाहर का रास्ता दिखा दिया। ऐसी पोलों का अस्तित्व सूरजपोल, हाथीपोल, चांदपोल के रूप में आज भी बना हुआ है।

होली पर बीकानेर में जगह-जगह ख्यालों के प्रदर्शन आयोजित होते हैं। पहले की रंगत अलग थी। उन ख्यालों में रम्मत नामक ख्यालों का अध्ययन करने होली से पूर्व सन् 1964 में मेरा वहां जाना हुआ। वहां रह रहे अध्ययन खोजी उदय नागोरीजी से दो-चार बार मिलना हुआ। उनसे हुई वार्ता-प्रसंग में उन्होंने एक हस्तलिखित रूक्का बताया जिसमें 84 प्रकार के मूर्ख बताये गये थे। इस पानड़े के अन्त में संवत् 1764 आसाढ़ सुदी 2 की मिति तथा पं. मूलकचन्द लिखित श्री जैसलमेर दुर्गे लिखा हुआ था। इसकी भाषा स्थानीय बोली लिये थी। पाठकों की जानकारी के लिए यहां उसका हिन्दीकरण प्रस्तुत है। इन मूर्ख प्रकारों के अन्त में 'वह मूर्ख' लिखा गया था। ये प्रकार हैं-

(1)बच्चे की संगति करे (2) बिना काम दूसरे के घर जाये (3) पिता को नीच कहे (4) बिना मतलब बहसबाजी करे (5) बिना काम पाप-कर्म करे (6) दान देने वाले को मना करे (7) अकारण झगड़ा करे (8) गीत-कथा कहते समय व्यर्थ का प्रपंच करे (9) बड़ों के आगे आए (10) नीच की संगत करे (11) बड़ों के सामने खुले मुंह बात करे (12) स्त्री से फालतू झगड़े (13) राजा जिसे सम्मान दे उसके सम्मुख बोले (14) मैदान में बैठ लड्डू पीछे रखे (15) दरबार में झूठ बोले (16) रूपवान स्त्री देख मन करे (17) गुरु सम्मुख बोले (18) मैदान में बैठ बात करे (19) गुरु सम्मुख पालथी मार बैठे (20) कुलटा स्त्री के घर जाये (21) सोनार से प्रीत करे (22) जानबूझ कर कुकर्म करे (23) पंडित से वाद करे (24) अपने को बीमारू बताये (25) गली बीच स्त्री से बात करे (26) राजा से प्रीत जान विश्वास करे (27) अनसुने को सुनाये (28) भयग्रस्त हो अकेला चले (29) अकेला बड़बड़ाता रहे (30) बिना जान-पहचान साथ निकले (31) बार-बार अकड़ कर बैठे (32) भोजन बीच उठे (33) कथा कहते हंसे (34) अवयस्क से प्रीत करे (35) अकड़ बैठ भोजन करे (36) सम्मुख बैठ पेशाब करे (37) निर्लज हो नीति की बात करे (38) जरूरी काम जाते हुए को रोके (39) सिर चढ़कर बैठे (40) मूंछ बिना केवल दाढ़ी का स्मरण करे (41) बिना गांव बसे (42) शगुन लेने बाद भी लौट आए (43) गाली देकर चोट पहुंचाये (44) बिना भूख भोजन करे (45) सुथार द्वारा लकड़ी घड़ते समय आगे खड़ा रहे (46) पासे खेलते वाद करे (47) तैरना नहीं आते पानी में जाये (48) जीमते समय गुस्सा करे (49) जाते हुए सर्प को छेड़े (50) जड़ बैल जोते (51) बिना सवार घोड़े चढ़े (52) मुख्य सांड मारने वाला (53) झूठमूठ के पशु से सोकर निकाले (54) पंडित होने पर गर्व करे (55) दानी होने पर गर्व करे (56) रामत खेलते गुस्सा करे (57) रूठे मित्र को नहीं मनावे (58) गुरु-मित्र से वाद करे (59) निर्बल होते सबल काम करे (60) सबल काम पड़े दूर रहे (61) धर्म करते पाप पालने वाला (62) गूढ़ बात को चौड़ा करे (63) धर्मजीवी की निंदा करे (64) भोजन करते ही पानी पिये (65) रितुमती से भोग करे (66) पढ़ने बैठते समय गुरु की वंदना नहीं करे (67) झूठे बर्तने से लिखे (68) पढ़ते वक्त रूष्ट हो निकले (69) पढ़ते समय आलस करे (70) बिना चाह के सीख दे (71) याचक से प्रीत करे (72) रात को खाट खींचे (73) दीपक के अग्नि लगाये (74) दरबार में गंदा जाये (75) शिष्य और पुत्र के साथ व्यवहार में विलंब करे (76) लिखते समय बात करे (77) बहू से गुस्सा करे (78) रूपवती स्त्री ढीली लगे (79) अनावश्यक देरी करे (80) विष पान करे (81) आग लगने पर बैठा रहे (82) कुए के पास बैठ हंसीठट्ठा करे (83) दरबार में झूठी साख भरे (84) दो की बातों में दखल दे।

मूर्खों के इन प्रकारों से तो यही लगता है कि हममें से हर व्यक्ति अपने जीवनकाल में मूर्ख बनने से शायद ही बच निकले। बहुत सारी चीजें तो हमारे रात-दिन के व्यवहार में घटती रहती हैं और हमारे बड़ेरे भी इनसे दूर रहने की शिक्षा देते पाये जाते हैं। यदि हम इनका ध्यान रखें तो कदम-कदम पर मूर्ख बनने से बच सकते हैं।

वर्तमान का जीवन परिवेश कई दृष्टियों से बदलाव लिये है। संवत् 1764 में जो चीजें अकरणीय थीं वे आज भी अकरणीय बनी हुई हैं। देखना यह है कि तब 84 प्रकार के मूर्ख थे, अब उस संख्या में वृद्धि तो नहीं हुई है।

पान का बीड़ा

'यूं तो आपके लिए
जान हाजिर है मगर अभी तो पान हाजिर है।' धनराज टोड़ावत का नाम याद आते ही मुझे ये पंक्तियां सहज याद हो आती हैं। आज वे जीवित होते तो 108 वर्ष के होते। धनराजजी ने सात बरस की उम्र से ही अपना खानदानी पान का काम सम्भाल लिया। उन्होंने कभी पान नहीं खाया मगर हमेशा डीबी बटुआ साथ रखा और जो भी मिला उसे तबीयत से पान खिलाया।

महाराणा फतहसिंहजी और उनके उत्तराधिकारी महाराणा भूपालसिंहजी की सेवा में भी ये खूब रहे। मरजी-माफिक पान खिलाकर महाराणाओं के भी बड़े मरजीदान रहे। महाराणा फतहसिंहजी कपूरी पान के शौकीन थे जबकि भूपालसिंहजी मगई पान का शौक फरमाते थे।

महाराणा का नाम लेते ही मैंने पान के बीड़ों का जिक्र छेड़ा तो धनराजजी बोले कि महलों में पान का बीड़ा जब तक नहीं दिया जाता तब तक न तो किसी का स्वागत होता न सीख होती। दरीखाने का बीड़ा ग्यारह सीकों का होता। सीख का बीड़ा तेरह सीकों का होता। पांच या दस कोरे पान खांखरे के पत्ते में रखकर उनको बांस की सीकों से बन्द कर दिया जाता, यही बीड़ा कहलाता। उन्होंने बताया कि रनिवास का बीड़ा चौदह सीकों वाला होता। इसमें एक पान की बीड़ी बनाकर उसमें सभी मेवे रख दिये जाते। पांच दासियां इसे ले जाकर महाराणीजी को झेला देती। इसके लिए अलग से तम्बोल रवाना होता जिसके अलग हाकिम होते। एक बीड़ा गमी का होता जिसके ग्यारह सीकें होतीं। इसे महाराणा जहां बैठने जाते, ऊपर कपूर रखकर गमी वाले को देते। सरदारों, उमरावों को उनकी इज्जत के अनुसार बीड़े दिये जाते।

खैरोदा निवासी धनराजजी की छोटी उम्र में ही पिता चल बसे। इससे उनका लालन-पालन मुश्किल हो गया तब उदयपुर इनके समधी मोहनलाल इन्हें चार रूपया माहवार रोटी, कपड़ा देने की शर्त पर अपने यहां ले आये। एकबार मोहनलालजी ने तीर्थयात्रा की तो इनकी मां को भी ले गए जिसका इतना खर्च बैठा कि धनराजजी चौदह बरस नौकरी करे तो मोहनजी का कर्ज उतारे। इस तरह की एक लिखा-पढ़ी भी करा ली।

फलस्वरूप धनराजजी ने सरवण पूत की तरह बारह बरस उनकी सेवा की फिर अपनी अलग दुकान की तो जात वालों ने इनका नूता बन्द कर इन्हें जाति से बहिष्कृत कर दिया पर उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। अपनी होशियारी से धनराजजी महलों में नौकरी पाकर महाराणा के ऐसे विश्वासपात्र बन गये कि दूसरे लोग इनसे ईर्ष्या करने लग गये। उस जमाने के तो कई किस्से हैं जिनको याद करने से उनकी आंखें भर आईं। धनराजजी के पुत्र हीरालाल ने उदयपुर के चेटक चौराहे पर टोड़ावत ताम्बुल नाम से पान की अच्छी दुकान खोली थी जहां संध्या को साहित्यिकों की बड़ी गपशप जुड़ती। कई बार मैंने भी यहां सुई-कैंची होती राजनीतिक बहसों की गर्माहट ली है।

संस्कार परिवर्तन से स्वर्णिम समाज का सतयुग लाना है : शिवानी दीदी

रविवार 10 फरवरी 2019 को प्रखर वक्ता ब्रह्माकुमारी बी. के. शिवानी का आध्यात्मिक व्याख्यान आयोजित किया गया। ब्रह्माकुमारीज प्रतापनगर एवं कृषि विश्वविद्यालय के साझे में आयोजित इस कार्यक्रम में सैंकड़ों लोगों की उपस्थिति में शिवानी दीदी ने राजयोग, जीवन जीने की कला, खुद को समझ कर दुनिया को बदलने की कला जैसे विषयों पर बड़ा सारगर्भित व्याख्यान दिया। व्याख्यान का केन्द्रीय विषय था - 'स्वर्णिम समाज की स्थापना के लिए राजयोग द्वारा संस्कार परिवर्तन।' यहां प्रस्तुत हैं विकास बोकड़िया द्वारा व्याख्यान के महत्वपूर्ण अंश।

इस दुनिया को घोर कलयुग कहते हैं। इसके बाद फिर सुबह आने वाली है। हम ही सुबह को थे। हम ही दोपहर को थे। हम ही शाम को थे। हम ही रात को थे। हम ही घोर रात्रि को हैं। इस घोर रात्रि के बाद फिर सुबह होगी। यह चक्र चलता रहा है। जो हम सुबह थे, वो ही रात को हैं। सृष्टि की सुबह सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग, कलयुग और घोर कलयुग है। हम कोई भी शुभ काम करते हैं तो 'स्वास्तिक' बनाते हैं। इसके चार भाग होते हैं। सतयुग इसका पहला भाग है जब स्वास्तिक का ऊपर का भाग अर्थात हमारा हाथ 'देने की मुद्रा' में है। दूसरे युग में हाथ नीचे है। त्रेतायुग में हाथ उल्टा है अर्थात हमने मांगना शुरू कर दिया है और चौथे में हाथ ऊपर अर्थात कलयुग है। स्वास्तिक का अर्थ 'स्व का अस्तित्व' है। यह जिसको याद रहेगा, उसका जीवन शुभ हो जाएगा। अगर कलयुग को सतयुग बनाना है तो हमें हमेशा दुआएं, शुभ भावना देने वाला बन जाना है।

हम रोज दीया जलाते हैं। दीया जलाना शुभ होता है। दीया बुझाना अशुभ होता है। दीया का मतलब प्यार दिया, सम्मान दिया, विश्वास दिया। अंदर का दीया बुझ जाता है तो अशुभ हो जाता है। कोई हमारे सामने आएगा, अपने संस्कार कर्मों से दिखाएगा, तो हमें हर संस्कार को शुभ भावनाएं प्यार देना है। सृष्टि को कलयुग हम सबने मिलकर बनाया है। सतयुग भी हम ही बनाएंगे। सतयुग मन में बनाना है। अपने जीवन को आज और अभी स्वर्ग बनाना है। यह नहीं देखना है कि सामने वाले ने क्या दिया। रिश्तों में बिजनेस नहीं करना है। संकल्प कीजिए कि मुझे किसी से कुछ नहीं चाहिए। मैं सबको देने वाली आत्मा हूं। परमात्मा सुंदर इक्वेशन बताते हैं कि जो भी चाहते हैं वह तभी मिलेगा जब औरों को देते हैं। देने वाले के पास च्वाइस नहीं है। जो गुस्सा क्रिएट कर रहा है वह खुद को इससे नहीं बचा सकता। लेने वाले के पास च्वाइस है कि वह चाहे तो ले, नहीं चाहे तो नहीं ले। इसीलिए हमें जीवन में 'अच्छी चीजों का दीया' बनना है। प्यार चाहिए तो सबको दो। सम्मान चाहिए तो सबको दो। महिमा चाहिए तो सबकी करो। विश्वास चाहिए, सबको विश्वास दो। जब हम देते जाएंगे तो हममें यह सब बढ़ता ही चला जाएगा।

कुछ लोग इंतजार कर रहे हैं कि दुनिया बदलेगी। कुछ लोग जिम्मेदारी उठाएंगे कि हम दुनिया को बदलेंगे। सतयुग में हमारी आत्मा रूपी बेट्री पूरी चार्ज थी। आज यह बहुत कम चार्ज रह गई है। हमें इसे 'फुल्ली चार्ज' करना है। कुछ साल पहले तक मेडिटेशन, योग और तपस्या करना वैकल्पिक था, क्योंकि सभी स्वस्थ थे मगर आज यह अनिवार्य हो गया है। डिप्रेशन की जो भी समस्याएं हैं वो हमारे लो बेट्री के संकेत हैं। मेडिटेशन में हम आत्मा को परमात्मा, पावर हाउस से कनेक्ट करते हैं। सिंपल साइंस है कि जिसको हम याद करते हैं उसके वाइब्रेशन आने लगते हैं। भगवान को याद करेंगे तो बेट्री चार्ज हो जाएगी। लोगों को याद करेंगे तो बेट्री डिस्चार्ज हो जाएगी। राजयोग का मतलब स्वयं पर राज करना। जो सर्वश्रेष्ठ है उसके साथ योग लगाना।

अपने संस्कारों को बदलने से ही दुनिया को बदला जा सकता है। हम सबके प्रति उदार भाव रखते हुए सबके मंगल की कामना करें। कोई बुरा भी करे तो भी उसके प्रति अच्छी भावना के वाइब्रेशन भेजें तो हम धरती को स्वर्ग बना सकते हैं। छोटे-छोटे अभ्यासों, बातों से जीवन में बड़े बदलाव लाकर हमें अपने संस्कारों से फिर धरती पर सतयुग लाना है।

हम सब दूसरों के संस्कारों को बदलना चाहते हैं। हमारा सारा ध्यान दूसरों के संस्कारों की तरफ जाता है। दूसरों के संस्कार हमारे अनुकूल नहीं होते हैं तो हमें तकलीफ होती है। कुछ लोग अपने संस्कारों को लेकर बहुत ही 'कंफर्टेबल' होते हैं। उनके संस्कारों को देख कर हमारा माइंड डिस्टर्ब होता रहता है। कभी-कभी

हम उनको देखकर अपने कुछ और ही संस्कार बना देते हैं। इनमें कौनसी चीज ज्यादा आसान है? अपने संस्कार चेंज करना या दूसरों के संस्कार बदलना। जब अपना संस्कार बदलना आसान है तो दूसरों से 'रिक्वेस्ट' क्यों करते हैं। हम उनसे क्यों कहते हैं कि ऐसे मत करो, वैसे मत करो। काम ऐसे नहीं करो। ऐसे नहीं बैठो, ऐसे नहीं चलो, ऐसे नहीं सोचो, ऐसे नहीं मुड़ो। दूसरों को चेंज करना असंभव है। हम दूसरे को राय दे सकते हैं। हमारी बात अच्छी लगेगी तो वह उसको स्वीकार करेगा और तब वो अपना संस्कार चेंज करेगा। सच तो यह है कि हम सब एक ही व्यक्ति का संस्कार बदल सकते हैं और वो हैं-'हम खुद'। हमारा बहुत सारा समय दूसरों को बदलते की कोशिश में जाता है।

जैसे अपने चेहरे को आइने में देखते हैं वैसे ही अपने मन की स्थिति को भी चेक करें। अपने आप को देखें। रिश्तों में, काम के क्षेत्र में, अपने सोचने के तरीके को देखें। व्यवहार करने का तरीका, कौनसी ऐसी आदत है जो मुझे व औरों को डिस्टर्ब करती है यह देखें और तय करें कि आज से मेरा यह संस्कार है। अपनी एक आदत को चुनें व बदलने का संकल्प करें।

लोग हमारा कहना मानते हैं। हम लोगों का कहना मानते हैं। लोग हमें राय देते हैं। हम लोगों को राय देते हैं। लोग हमारा मूड ठीक करते हैं। हम लोगों का मूड ठीक करते हैं। फिर हम खुद का मूड ठीक क्यों नहीं करते? हमारा मूड खराब होता है तो हम सोचते हैं कि दूसरे हमारा मूड ठीक कर सकते हैं क्योंकि हमने ज्यादा अपने रिश्ते दूसरों से बनाए हुए हैं। मेडिटेशन का मतलब खुद से रिश्ते बनाना है। आप जब भी विचलित हों, तीस सैंकड के लिए रुकें। मन से दो लाइन मीठी-मीठी बात कर मूड को ठीक कर लें। हमारा मन भी तब हमारा कहा मानेगा। हम दिनभर दूसरों को इंस्ट्रक्शन देते रहते हैं। वैसे ही हमें अपने मन को डिसिप्लिन करना है।

हमारे सारे काम मन कर रहा है। रिश्ते मन निभा रहा है। शरीर की सेहत मन बना रहा है किंतु हमने यह कह दिया कि ये मन हमारे कंट्रोल में नहीं है। हमारा मन हमारी खुशी क्रिएट करता है। हमारे शरीर की सेहत क्रिएट करता है। मन की हर सोच 'वाइब्रेशन' में जाती है तो सृष्टि बनती है। अगर हमें अपने मन की स्थिति को ठीक करना है, रिश्तों को सुंदर बनाना है, सृष्टि को सतयुग बनाना है तो अपनी सोच को बदलना पड़ेगा।

कोई हमारे साथ गलत व्यवहार करे तो उसके साथ भी हमेशा अच्छा व्यवहार करें। जो गलत व्यवहार कर रहे हैं उनकी अपने मन की स्थिति बीमार है। हम अच्छी भावनाएं भेजेंगे तो कुछ लोग ठीक हो जाएंगे, कुछ नहीं होंगे। यह ध्यान रखना है कि हम दूसरों के संस्कारों का चिंतन करके उसे अपने चित्त का हिस्सा नहीं बना लें। दूसरे के कर्मों की वजह से हमें अपने कर्मों को नहीं बिगाड़ना अपने मन और चित्त को मैला नहीं करना है। दिन में अलग-अलग लोग मिलते हैं। अगर अलग-अलग लोगों के संस्कार ले लिए तो ना जाने कितने संस्कार लेकर हम शाम को घर लौटेंगे।

देवी-देवताओं के जब चित्र देखते हैं तो पीछे एक सफेद रंगा आभामंडल दिखाई देता है। वो सफेद होता है मतलब उनका मन और चित्त मैल रहित है। हम सबके पीछे भी एक आभामंडल है। हर आत्मा का आभामंडल उसकी सोच, भावनाएं, शब्द, व्यवहार, स्मृतियां और इरादे से बनता है। देवी-देवता हमेशा देने वाले होते हैं, उनका आभामंडल सफेद होता है। हम सब कहते हैं कि ये मेरी कुलदेवी है। ये मेरे कुलदेवता हैं। मतलब हम भी उन्हीं देवी और देवताओं के कुल से आते हैं। हमारा भी आभामंडल श्वेत होना चाहिए। इस अवसर पर ब्रह्माकुमारीज के मीडिया चीफ वरिष्ठ राजयोगी भ्राता करुणाजी ने अपनी शुभकामनाएं व्यक्त करते हुए सबका आह्वान किया कि राजयोग से जुड़कर जीवन बदलें। आयोजन में अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक भूपेंद्रकुमार दक, निदेशक खनिज विभाग जितेंद्र उपाध्याय, अतिरिक्त पुलिस कमिश्नर जयपुर प्रसन्न खमेसरा, भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो के पुलिस अधीक्षक तेजराजसिंह, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि की रजिस्ट्रार सुश्री प्रियंका जोधावत, राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति प्रो. एस.एस सारंगदेवोत, इनकम टेक्स ज्वाइंट कमिश्नर एम. रघुवीर, आर्ची ग्रुप के निदेशक ऋषभ भाणावत सहित शहर के कई गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।